श्रीबगला-कल्पतरु

श्री बगला के त्र्यक्षर, चतुरक्षर, अष्टाक्षर, नवाक्षर, षट्-त्रिंशदक्षर मन्त्रों की साधना

'राष्ट्र-गुरु'
श्रीस्वामी जी महाराज
दतिया (म०प्र०)
के अनन्य भक्त

'कुल-भूषण'
पं० रमादत्त शुक्ल एवं
कुलानन्द-मयी
देव्यम्बा श्रीमती उमादेवी

कल्याण मन्दिर प्रकाशन
श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

'चण्डी'-पुस्तक-माला की कुछ उपयोगी पुस्तके

जय माँ काली!
परब्रह्म-रूपां भजामि

जय माँ तारा!
परब्रह्म-रूपां भजामि

जय माँ षोडशी!
परब्रह्म-रूपां भजामि

जय माँ भुवनेश्वरी!
परब्रह्म-रूपां भजामि

जय माँ छिन्नमस्ता!
परब्रह्म-रूपां भजामि

पर-ब्रह्म की चिन्मय-शक्तियाँ

- श्री दुर्गा-साधना (२ पुस्तकें) ५५/-
- देवी-सूक्त ४०/-
- मन्त्रात्मक सप्तशती ६५०/-
- सार्थ चण्डी (श्रीदुर्गा सप्तशती) ३५०/-
- अद्भुत सप्तशती १५०/-
- हवनात्मक अद्भुत सप्तशती १२५/-
- सम्पुटित श्रीदुर्गा-सप्तशती ४०/-
- सप्त-दिवसीय सप्तशती-पाठ ३५/-
- नारायणी-स्तुति ४०/-
- सप्तशती के विविध प्रकार २५/-
- साधना-रहस्य ८०/-
- दीक्षा-प्रकाश ३५/-
- श्रीकाली-कल्पतरु ३००/-
- श्रीतारा-कल्पतरु ४५/-
- श्रीबाला-कल्पतरु ३५/-
- शक्रादि-स्तुति २५/-
- रात्रि-सूक्त १५/-
- श्रीरमा-पारायण ३५/-
- श्रीदुर्गा-कल्पतरु १५/-
- नव-ग्रह-साधना १५०/-
- कुण्डलिनी-साधना ४०/-
- तन्त्र-विशेषांक ३०/-
- अघोर-पन्थ का निरूपण २५/-
- श्रीमहा-गणपति-साधना ५०/-
- साधक का संवाद २५/-
- धर्म-मार्ग पर २५/-
- सांख्यायन तन्त्र १००/-

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें
श्रीचण्डी-धाम
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-०६ } फोन ०५३२-२५०२७८३, ९४५०२२२७६७
E-mail : Chandi_dham@rediffmail.com

'चण्डी' : विशेष प्रस्तुति

श्रीबगला-कल्पतरु

श्रीबगला-साधना (पुष्प ५)

श्रीबगला-त्र्यक्षर-साधना

श्रीबगला-तुर्याक्षर-साधना

श्रीबगला-पञ्चाक्षर-साधना

श्रीपीताम्बरा-अष्टाक्षर-साधना

श्रीबगला-एकादशाक्षर-साधना

श्रीबगला-षट्-त्रिंशदक्षर-साधना

*

आदि-सम्पादक

प्रातः-स्मरणीय 'कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल

सम्पादक

ऋतशील शर्मा

*

प्रकाशक

पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक :

परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन, श्रीचण्डी-धाम,

प्रयाग-राज-२११००६ ☎(०५३२)-२५०२७८३, ९४५०२२२७६७

अनुदान ४०/-

प्रकाशक
पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक
परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ९४५०२२२७६७

आवश्यक सूचना

'कौल-कल्पतरु' चण्डी (पुस्तक-माला) द्वारा मार्च, २०१५ में निम्न-लिखित तीन पुस्तकें प्रकाशित होंगी। यथा -

(१) श्रीबगला-साधना, पुष्प (६), अनुदान ४०/-

(२) श्री श्री विद्या - साधना, पुष्प (६), अनुदान ४०/-

(३) श्री दुर्गा-साधना, पुष्प (३), अनुदान ४०/-

उक्त तीनों पुस्तकें एक साथ **१५०=०० रु० की वी०पी०पी०** द्वारा भेजी जाएँगी।

जो बन्धु **१५०=०० की वी०पी०पी०** मँगाना न चाहते हों, वे कृपया हमारे दूरभाष नं० **(०५३२) २५०२७८३** एवं मोबाइल **०९४५०२२२७६७** पर हमें सूचित करेंगे।

जो बन्धु **'चण्डी' पुस्तक-माला** सम्बन्धी अन्य जानकारी प्राप्त करने के लिए अपना दूरभाष/मोबाइल नं० हमें सूचित करेंगे, उन्हें हम **वी०पी०पी० भेजने सम्बन्धी सूचना** दूरभाष या मोबाइल द्वारा देंगे तथा उनके नम्बर उनके नाम के साथ लिखे जाएँगे, जिससे पोस्टमैन भी उनसे उस नम्बर पर सम्पर्क कर सकेगा।

अतएव सभी बन्धुओं से निवेदन है कि वे एक बार **श्रीचण्डी धाम** के **दूरभाष (०५३२) २५०२७८३** अथवा **मोबाइल ०९४५०२२२७६७** पर अपना नम्बर सूचित करने की कृपा करेंगे।

एस०एम०एस० के द्वारा सम्पर्क करने के लिए कृपया **अपना नाम**, प्रदेश के अनुसार **सदस्य सं०** जो आपके नाम के पहले लिखी है सूचित करेंगे।

- प्रबन्धक, श्री चण्डी धाम, प्रयाग-६

तृतीय संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण
('चण्डी' पुस्तक-माला वर्ष ७३, सं० १)
श्री सीता जयन्ती, 'प्लवंग' सं० २०७१ वि०-१२ फरवरी, २०१५

परा-वाणी प्रेस, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज (उ०प्र०)

अनुक्रम

०१. श्रीबगला के विभिन्न मन्त्र — २९४

०२. श्रीबगला-त्र्यक्षर अर्थात् तीन अक्षरों की मन्त्र-साधना — २९५

०३. श्रीबगला-त्र्यक्षर-मन्त्र द्वारा श्रीपीताम्बरा-आराधना — २९७

०४. श्रीबगला-तुर्याक्षर अर्थात् चार अक्षरों की मन्त्र-साधना — २९९

०५. श्रीबगला-चतुरक्षर-मन्त्र द्वारा श्रीपीताम्बरा-आराधना — ३०१

०६. श्रीबगला-पञ्चाक्षर अर्थात् पाँच अक्षरों की मन्त्र-साधना — ३०३

०७. श्रीबगला-पञ्चाक्षर-मन्त्र द्वारा श्रीपीताम्बरा-आराधना — ३०५

०८. श्रीबगला-अष्टाक्षर अर्थात् आठ अक्षरों की मन्त्र-साधना — ३०९

०९. श्रीबगला-अष्टाक्षर-मन्त्र द्वारा श्रीपीताम्बरा-आराधना — ३११

१०. श्रीबगला-एकादशाक्षर अर्थात् ग्यारह अक्षरों की साधना — ३१३

११. श्रीबगला-एकादशाक्षर-मन्त्र द्वारा श्रीपीताम्बरा-आराधना — ३१५

१२. श्रीबगला-षट्-त्रिंशदक्षर अर्थात् छत्तीस अक्षरों की साधना (मन्त्र-महोदधि के अनुसार) — ३१७

१३. श्रीबगला-षट्-त्रिंशदक्षर अर्थात् छत्तीस अक्षरों की साधना (शाक्त-प्रमोद के अनुसार) — ३२२

१४. श्रीबगला-षट्-त्रिंशदक्षर अर्थात् छत्तीस अक्षरों की साधना (मन्त्र-महार्णव के अनुसार) — ३२७

१५. श्रीबगला-षट्-त्रिंशदक्षर अर्थात् छत्तीस अक्षरों की साधना (सांख्यायन-तन्त्र के अनुसार) — ३२९

१६. षट्-त्रिशंदक्षर-मन्त्र द्वारा श्रीपीताम्बरा-आराधना (१) — ३३१

१७. षट्-त्रिशंदक्षर-मन्त्र द्वारा श्रीपीताम्बरा-आराधना (२) — ३५३

१८. षट्-त्रिशंदक्षर-मन्त्र द्वारा श्रीपीताम्बरा-आराधना (३) — ३५७

१९. भगवती श्रीपीताम्बरा के शिव भगवान् मृत्युञ्जय के त्र्यक्षर-मन्त्र की साधना — ३५९

श्रीबगला के विभिन्न मन्त्र

('कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल जी की कुल-वाणी के अनुसार)

भगवती बगला के विभिन्न मन्त्रों यथा– १. त्र्यक्षर, २. चतुरक्षर, ३. पञ्चाक्षर, ४. अष्टाक्षर, ५. एकादशाक्षर, ६. षड्-त्रिंशदक्षर आदि की चर्चा प्रारम्भ करने से पूर्व **श्रीबगला** की आराधना से सम्बन्धित कुछ मुख्य बातों को जानना बहुत आवश्यक है। **भगवती बगला** की आराधना के मुख्य उद्देश्य क्या हैं? इस सम्बन्ध में एक प्राचीन स्तुति की निम्न-लिखित पंक्तियों में कुछ प्रकाश डाला गया है। यथा–

भेदाभेद - विभेद - भेदन - करीं, बाधापहा - ब्राह्मणीम्।
बोधाबोध-बलां बुधार्चित-पदां, बुद्धि-प्रदां बोधिनीम्।
ब्रह्मास्त्र-विद्यां बल-प्रमथिनीं, देवीं श्रीबगलां भजे।।

अर्थात् जो **भेदाभेद को मिटानेवाली हैं**, जो **अद्वैत प्रदान करनेवाली हैं**, जो **बाधाओं को दूर करनेवाली हैं, ब्रह्म को जानने व बतानेवाली हैं**, जो **बोधाबोध** तथा **बल-स्वरूपा हैं**, जिनके चरणों की पूजा बुद्धिमान् लोग किया करते हैं, जो **बुद्धि देनेवाली हैं, बोध करानेवाली हैं, ब्रह्मास्त्र-विद्या हैं, दुष्ट बल का मन्थन करनेवाली हैं**, ऐसी देवी **श्रीबगला** की मैं वन्दना करता हूँ।

इस प्रकार उक्त स्तुति से यह स्पष्टतया ज्ञात होता है कि **भगवती बगला** की आराधना के क्या उद्देश्य हैं। **श्रीबगला पटल** भी इस सम्बन्ध में स्पष्ट रूप से कहता है कि –

स्तम्भन-शक्ति बगलामुखी, अन्तः शत्रु-स्तम्भन-कामो वा।
अन्तर्वायुं सञ्चार-निरोधेन वा, यो वायुं स्तम्भयेत् स सर्वं स्तम्भयेत्।।

अर्थात् **श्रीबगला-मुखी स्तम्भन-शक्ति हैं**। आपकी आराधना के द्वारा आपके भक्त-गण मुख्यतः–

(१) **अन्तःशत्रुओं** (काम, क्रोध आदि), **दुष्ट कामनाओं** का स्तम्भन करते हैं।

(२) **अन्तः वायु** अर्थात् **प्राण-शक्ति** को अपने वश में कर, **चञ्चल मन** को शान्त करते हैं और **अशुद्ध तत्त्वों से शुद्ध तत्त्वों** की ओर अग्रसर हो सभी चिन्ताओं, भयों से मुक्त हो जाते हैं।

अतएव हम देखते हैं कि **भगवती बगला** की आराधना के मूल में एक भक्त के लिए **योग-सिद्धि** अथवा **कुण्डलिनी की चैतन्यता** ही मुख्य है। इसी मुख्य लक्ष्य को हृदयङ्गम कर उनके विभिन्न मन्त्रों द्वारा उनकी आराधना करनी चाहिए। जो भक्त-गण उक्त उद्देश्यों को हृदयङ्गम कर **माता पीताम्बरा** की आराधना करते हैं, उन्हें उनके जीवन को बाधा पहुँचानेवाले बाहरी **शत्रुओं, दुष्टों, रोगों, आपदाओं** आदि से सहज ही मुक्ति प्राप्त हो जाती है और इसके लिए उन्हें अलग से **'प्रयोग'** आदि करने की आवश्यकता ही नहीं होती। **'राष्ट्र-गुरु'** परम पूज्य स्वामी जी ने इसीलिए माता की **'आरती'** में लिखा है–

इत्थं साधक - वृन्दैः चिन्तयते रूपं मातः चिन्तयते रूपं।
शत्रु-विनाशक - बीजं शत्रु - विनाशक-बीजं धृत्वा हृत् - कमले।।

रुद्र-यामल तन्त्र, कुलार्णव तन्त्र आदि महत्त्व-पूर्ण ग्रन्थों में भी इस सम्बन्ध में निम्न-लिखित प्रमाण देखने को मिलते हैं– **'प्राण-वायु-वशेनापि, वशीभूताः चराचरः।'** अथवा **'अन्तः वायुं सञ्चारं निरोधयेत्, योग - सिद्धो भविष्यति। निःश्वासोच्छ्वास - हीनश्च निश्चितं मुक्त एव सः।।'**

उक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए यहाँ **भगवती बगला** के विभिन्न मन्त्र और उनके द्वारा उनकी आराधना हेतु **गुरु-मण्डल** द्वारा सूचित कुछ उपाय दिए जा रहे हैं। आशा है कि इनसे माता पीताम्बरा के भक्त-गण लाभान्वित होंगे।

– ऋतशील शर्मा

श्रीबगला-त्र्यक्षर अर्थात् तीन अक्षरों की मन्त्र-साधना

'ॐ ह्लीं ॐ'

।। मन्त्रोद्धार ।।

तारेण सम्पुटं कृत्वा, स्थिर-मायां जपेत् सुधीः।
सर्व-शास्त्रेषु पाण्डित्यं, जायतेऽचिरात् प्रिये।।

।। मन्त्र-माहात्म्य ।।

यह तारक मन्त्र ॐ-कार अर्थात् ब्रह्म की क्रिया-शक्ति के प्रवर्त्तकों के रूप में त्रि-देवों ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर-रूपी गुरुओं से सम्पुटित स्थिर-माया-बीज है। इसके जप से सभी शास्त्रों में प्रवीणता प्राप्त होकर महा-माया की कृपा से विशुद्ध ज्ञान की प्राप्ति होती है।

।। विनियोग ।।

ॐ अस्य श्रीबगला-मुखी-त्र्यक्षर-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीबगला-मुखी देवता, लँ बीजं, ह्लीं (अथवा ईं) शक्तिः, ईं (अथवा ऐं) कीलकं, श्रीबगला-मुखी देवताम्बा-प्रीतये जपे विनियोगः।

।। ऋष्यादि-न्यास ।।

श्रीब्रह्मर्षये नमः शिरसि, गायत्री - छन्दसे नमः मुखे, श्रीबगलामुखी - देवतायै नमः हृदि, लँ बीजाय नमः गुह्ये, ह्लीं (अथवा ईं) शक्तये नमः पादयोः, ईं (अथवा ऐं) कीलकाय नमः सर्वाङ्गे, श्रीबगला-मुखी-देवताम्बा-प्रीतये जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

।। कर-न्यास ।।

ॐ ह्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ ह्लूं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ ह्लैं अनामिकाभ्यां हुम्। ॐ ह्लौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐ ह्लः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

।। अङ्ग-न्यास ।।

ॐ ह्लां हृदयाय नमः। ॐ ह्लीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्लूं शिखायै वषट्। ॐ ह्लैं कवचाय हुम्। ॐ ह्लौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ ह्लः अस्त्राय फट्।

।। ध्यान ।।

वादी मूकति, रङ्कति क्षिति-पतिः, वैश्वानरः शीतति,
क्रोधी शाम्यति, दुर्जनः सुजनति, क्षिप्रानुगः खञ्जति।
गर्वी खर्वति, सर्व-विच्च जड़ति त्वद्-यन्त्रणा यन्त्रितः,
श्री-नित्ये! बगलामुखि! प्रतिदिनं कल्याणि! तुभ्यं नमः।।

।। मानस-पूजन ।।

ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये घ्रापयामि नमः।
ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये दर्शयामि नमः।
ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये निवेदयामि नमः।
ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये समर्पयामि नमः।

।। मन्त्र-जप ।।

त्र्यक्षरी अर्थात् ३ अक्षर के मन्त्र का जप– 'ॐ ह्लीं ॐ' या 'ॐ ह्लीं ॐ'। जप के लिए हरिद्रा अर्थात् हल्दी की माला प्रशस्त है। **वर्ण-माला में जप निम्न प्रकार करना चाहिए–**

ॐ

०१. अं ॐ ह्लीं ॐ अं
०२. आं ॐ ह्लीं ॐ आं
०३. इं ॐ ह्लीं ॐ इं
०४. ईं ॐ ह्लीं ॐ ईं
०५. उं ॐ ह्लीं ॐ उं
०६. ऊं ॐ ह्लीं ॐ ऊं
०७. ऋं ॐ ह्लीं ॐ ऋं
०८. ॠं ॐ ह्लीं ॐ ॠं
०९. ऌं ॐ ह्लीं ॐ ऌं
१०. ॡं ॐ ह्लीं ॐ ॡं
११. एं ॐ ह्लीं ॐ एं
१२. ऐं ॐ ह्लीं ॐ ऐं
१३. ओं ॐ ह्लीं ॐ ओं
१४. औं ॐ ह्लीं ॐ औं
१५. अं ॐ ह्लीं ॐ अं
१६. अः ॐ ह्लीं ॐ अः
१७. कं ॐ ह्लीं ॐ कं
१८. खं ॐ ह्लीं ॐ खं
१९. गं ॐ ह्लीं ॐ गं
२०. घं ॐ ह्लीं ॐ घं
२१. ङं ॐ ह्लीं ॐ ङं
२२. चं ॐ ह्लीं ॐ चं
२३. छं ॐ ह्लीं ॐ छं
२४. जं ॐ ह्लीं ॐ जं
२५. झं ॐ ह्लीं ॐ झं
२६. ञं ॐ ह्लीं ॐ ञं
२७. टं ॐ ह्लीं ॐ टं
२८. ठं ॐ ह्लीं ॐ ठं
२९. डं ॐ ह्लीं ॐ डं
३०. ढं ॐ ह्लीं ॐ ढं
३१. णं ॐ ह्लीं ॐ णं
३२. तं ॐ ह्लीं ॐ तं
३३. थं ॐ ह्लीं ॐ थं
३४. दं ॐ ह्लीं ॐ दं
३५. धं ॐ ह्लीं ॐ धं
३६. नं ॐ ह्लीं ॐ नं
३७. पं ॐ ह्लीं ॐ पं
३८. फं ॐ ह्लीं ॐ फं
३९. बं ॐ ह्लीं ॐ बं
४०. भं ॐ ह्लीं ॐ भं
४१. मं ॐ ह्लीं ॐ मं
४२. यं ॐ ह्लीं ॐ यं
४३. रं ॐ ह्लीं ॐ रं
४४. लं ॐ ह्लीं ॐ लं
४५. वं ॐ ह्लीं ॐ वं
४६. शं ॐ ह्लीं ॐ शं
४७. षं ॐ ह्लीं ॐ षं
४८. सं ॐ ह्लीं ॐ सं
४९. हं ॐ ह्लीं ॐ हं
५०. ळं ॐ ह्लीं ॐ ळं

क्षं

इसके बाद **'विलोम'**-क्रम से **'ळं'** से **'अं'** तक (५१ से १०० तक) 'जप' करे। फिर **'अष्ट-मातृका-वर्णों'** (अं-कं-चं-टं-तं-पं-यं-शं) से १०१ से १०८ तक 'जप' करे। यथा–

१०१. अं ॐ ह्लीं ॐ अं
१०२. कं ॐ ह्लीं ॐ कं
१०३. चं ॐ ह्लीं ॐ चं
१०४. टं ॐ ह्लीं ॐ टं
१०५. तं ॐ ह्लीं ॐ तं
१०६. पं ॐ ह्लीं ॐ पं
१०७. यं ॐ ह्लीं ॐ यं
१०८. शं ॐ ह्लीं ॐ शं

होम– यथा-शक्ति 'जप' करने के बाद घृत व शक्कर-सहित पायस से होम करना चाहिए।

श्रीबगला-त्र्यक्षर-मन्त्र द्वारा श्रीपीताम्बरा-आराधना

भगवती बगला के त्र्यक्षर मन्त्र द्वारा श्रीपीताम्बरा की आराधना निम्न प्रकार की जा सकती है–
सबसे पहले ॐ-कार स्वरूप ब्रह्म-चैतन्य का अपने हृदय में ध्यान करना चाहिए। यथा–

।। श्री ब्रह्म-चैतन्य का ध्यान ।।

हृदय-कमल-मध्ये, निर्विशेषं निरीहम्।
हरि-हर-विधि-वेद्यं, योगिभिः ध्यान-गम्यम्।।
जनन-मरण-भीति-भ्रंशि सच्चित्-स्वरूपम्।
सकल-भुवन-बीजं, ब्रह्म-चैतन्यमीडे।।

अर्थात् जो निर्विशेष है, जो नाना प्रकार के भेदों से रहित है, जो निरीह चेष्टा-रहित है, जो ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर द्वारा ज्ञेय है, जो योगियों द्वारा ध्यान-गम्य है, जिसके द्वारा जन्म और मृत्यु का भय दूर होता है, जो नित्य और ज्ञान-स्वरूप है, जो समस्त भुवनों का बीज है, ऐसे ब्रह्म-चैतन्य को मैं अपने हृदय-कमल के मध्य में ध्यान करता हूँ।

उक्त प्रकार से ब्रह्म-चैतन्य का ध्यान करने के बाद भय-हरा महा-माया श्री पीताम्बरा देवी का ध्यान करना चाहिए। यथा–

।। भय-हरा महा-माया श्रीपीताम्बरा का ध्यान ।।

उद्यद्-भानु-सहस्र-कान्तिममलां वह्न्यर्क-चन्द्रेक्षणाम्।
मुक्ता-यन्त्रित-हेम-कुण्डल-लसत्-स्मेराननाम्भोरुहाम्।।
हस्ताब्जैरभयं वरं च दधतीं चक्रं तथाब्जं दधत् ।
पीनोत्तुङ्ग - पयोधरां भय - हरां पीताम्बरां चिन्तये।।

अर्थात् जिनकी कान्ति उदय होते सहस्र सूर्यों के समान है, जो निर्मला है, अग्नि-सूर्य-चन्द्र जिनके तीन नेत्र हैं, जिनका मुस्कान-युक्त मुख-कमल मोतियों से जटित स्वर्ण-कुण्डलों से शोभायमान है, जो चार कर-कमलों में १. चक्र, २. पद्म, ३. वर और ४. अभय धारण किए हैं, दोनों पयोधर पीन और उत्तङ्ग हैं, ऐसी भय-हरा पीताम्बरा भगवती का मैं ध्यान करता हूँ।

उक्त प्रकार ध्यान करने के बाद भगवती पीताम्बरा के त्र्यक्षर मन्त्र 'ॐ ह्लीं ॐ' से पूजन करना चाहिए। यथा –

।। मानस-पूजन ।।

ॐ ह्लीं ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं भय-हरा श्रीपीताम्बरा-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ ह्लीं ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं भय-हरा श्रीपीताम्बरा-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ ह्लीं ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं भय-हरा श्रीपीताम्बरा-प्रीतये घ्रापयामि नमः।
ॐ ह्लीं ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं भय-हरा श्रीपीताम्बरा-प्रीतये दर्शयामि नमः।
ॐ ह्लीं ॐ वं जले-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं भय-हरा श्रीपीताम्बरा-प्रीतये निवेदयामि नमः।
ॐ ह्लीं ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं भय-हरा श्रीपीताम्बरा-प्रीतये समर्पयामि नमः।

उक्त प्रकार मानस-पूजन करने के बाद त्र्यक्षर-मन्त्र से सम्पुटित ब्रह्म-स्तव का पाठ करना चाहिए। यथा –

।। त्र्यक्षर-मन्त्र से सम्पुटित ब्रह्म-स्तव ।।

।। ॐ ह्लीं ॐ ।।

नमस्ते सते सर्व - लोकाश्रयाय, नमस्ते चिते विश्व-रूपात्मकाय।
नमोऽद्वैत - तत्त्वाय मुक्ति - प्रदाय, नमो ब्रह्मणे व्यापिने निर्गुणाय।।१।।

।। ॐ ह्लीं ॐ ।।

।। ॐ ह्लीं ॐ ।।

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यम् , त्वमेकं जगत्-कारणं विश्व-रूपम्।
त्वमेकं जगत्-कर्तृ-पातृ-प्रहर्तृ, त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम्।।२।।

।। ॐ ह्लीं ॐ ।।

।। ॐ ह्लीं ॐ ।।

भयानां भयं भीषणं भीषणानाम्, गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम्।
महोच्चैः पदानां नियन्तृ त्वमेकम्, परेषां परं रक्षकं रक्षकानाम्।।३।।

।। ॐ ह्लीं ॐ ।।

।। ॐ ह्लीं ॐ ।।

परेश प्रभो सर्व-रूपाविनाशिन्, अनिर्देश्य सर्वेन्द्रियागम्य सत्य!
अचिन्त्याक्षर व्यापकाव्यक्त-तत्व, जगद्-भासकाधीश पायादपायात् ।।४।।

।। ॐ ह्लीं ॐ ।।

।। ॐ ह्लीं ॐ ।।

तदेकं स्मरामस्तदेकं जपामः, तदेकं जगत्-साक्षि-रूपं नमामः।
सदेकं निधानं निरालम्बमीशम्, भवाम्बोधि-पोतं शरण्यं व्रजामः।।५।।

।। ॐ ह्लीं ॐ ।।

उक्त सम्पुटित पाठ का प्रति-दिन संयत होकर इस भावना से पाठ करना चाहिए कि हे भय-हरा महा-माया श्रीपीताम्बरा तुम नित्य हो, तुम सभी लोकों का आश्रय हो, तुम ज्ञान-स्वरूप हो, तुम सर्व-व्यापी निर्गुण ब्रह्म हो, तुम एक-मात्र शरण्य अर्थात् आश्रय हो, तुम अद्वितीय वरेण्य हो, तुम जगत् का एक-मात्र कारण हो, तुम विश्व-रूप हो, एक-मात्र तुम्हीं सृष्टि-कर्त्ता, पालन-कर्त्ता और संहार-कर्त्ता हो, तुम भय के भय हो, तुम भयानक के भयानक हो, तुम ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर आदि के नियामक हो, तुम हमें अपाय अर्थात् ज्ञान-भक्ति से रहित होने से बचाओ।

उक्त प्रकार से नित्य सम्पुटित पाठ करने से महा-माया भगवती पीताम्बरा की कृपा की विशेष रूप से अनुभूति होती है। विशेष रूप से प्रदोष-काल अथवा सोमवार को उक्त सम्पुटित पाठ को भक्ति-पूर्वक पढ़ने व सुनाने से सभी प्रकार के भयों से मुक्ति प्राप्त होकर आनन्द की प्राप्ति होती है।

अन्त में माता पीताम्बरा के ॐ-कार-मय नामों का जप भी करना चाहिए। यथा –

ॐ-कार-वलयोपेतायै नमः, ॐ-कार-परमा-कलायै नमः, ॐ-वद-वद - वाण्यै नमः, ॐ-काराक्षर-मण्डितायै नमः, ॐ-लोक-पर-वासिन्यै नमः, ॐ-कार-मध्य - वीजायै नमः, ॐ-नमो-रूप-धारिण्यै नमः, ॐ-कारायै नमः।

श्रीबगला-तुर्याक्षर अर्थात् चार अक्षरों की मन्त्र-साधना

'ॐ आं ह्लीं क्रों'

।। मन्त्रोद्धार ।।

वेदादि विलिखेत् पूर्वं, पाश-बीजं ततः परं। स्तब्ध-मायां समुच्चार्य, अंकुश-बीजमेव च।
तुर्याक्षरी च बगला, सर्व - मन्त्रोत्तमोत्तमा।।

।। मन्त्र-माहात्म्य ।।

वेदादि 'ॐ-कार', पाश-बीज 'आं' एवं अंकुश-बीज 'क्रों' से युक्त स्तब्ध-माया बीज 'ह्लीं' का चिन्तन सभी मन्त्रों में उत्तम माना गया है। सहस्र-नाम में भगवती बगला को 'पाशांकुश-विभूषिता' कहा गया है।

।। विनियोग ।।

ॐ अस्य श्रीबगला-मुखी-चतुरक्षर-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, पंक्तिः छन्दः, श्रीबगला-मुखी देवता, ह्लीं बीजं, आं शक्तिः, क्रों कीलकं, श्रीबगला-मुखी देवताम्बा-प्रीतये जपे विनियोगः।

।। ऋष्यादि-न्यास ।।

श्रीब्रह्मर्षये नमः शिरसि, पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे, श्रीबगलामुखी-देवतायै नमः हृदि, ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये, आं शक्तये नमः पादयोः, क्रों कीलकाय नमः सर्वाङ्गे, श्रीबगला-मुखी-देवताम्बा-प्रीतये जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

।। कर-न्यास ।।

ॐ ह्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ ह्लूं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ ह्लैं अनामिकाभ्यां हुम्। ॐ ह्लौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐ ह्लः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

।। अङ्ग-न्यास ।।

ॐ ह्लां हृदयाय नमः। ॐ ह्लीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्लूं शिखायै वषट्। ॐ ह्लैं कवचाय हुम्। ॐ ह्लौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ ह्लः अस्त्राय फट्।

।। ध्यान ।।

कुटिलालक - संयुक्तां, मदाघूर्णित-लोचनाम्।
मदिरामोद - वदनां, प्रवाल - सदृशाधराम्।।
सुवर्ण-कलश-प्रख्य-कठिन-स्तन-मण्डलाम्।
आवर्त्त-विलसन्नाभिं, सूक्ष्म-मध्यम-संयुताम्।
रम्भोरु-पाद-पद्मां तां, पीत-वस्त्र-समावृताम्।।

।। मानस-पूजन ।।

ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीबगला-मुखी-देवताम्बा-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीबगला-मुखी-देवताम्बा-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीबगला-मुखी-देवताम्बा-प्रीतये घ्रापयामि नमः।
ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीबगला-मुखी-देवताम्बा-प्रीतये दर्शयामि नमः।
ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीबगला-मुखी-देवताम्बा-प्रीतये निवेदयामि नमः।
ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीबगला-मुखी-देवताम्बा-प्रीतये समर्पयामि नमः।

।। मन्त्र-जप ।।

चतुरक्षरी अर्थात् ४ अक्षर के मन्त्र का जप– 'ॐ आं ह्लीं क्रों'। जप के लिए हरिद्रा अर्थात् हल्दी की माला प्रशस्त है। वर्ण-माला में जप निम्न प्रकार करना चाहिए ।

०१. अं ॐ आं ह्लीं क्रों अं
०२. आं ॐ आं ह्लीं क्रों आं
०३. इं ॐ आं ह्लीं क्रों इं
०४. ईं ॐ आं ह्लीं क्रों ईं
०५. उं ॐ आं ह्लीं क्रों उं
०६. ऊं ॐ आं ह्लीं क्रों ऊं
०७. ऋं ॐ आं ह्लीं क्रों ऋं
०८. ॠं ॐ आं ह्लीं क्रों ॠं
०९. ऌं ॐ आं ह्लीं क्रों ऌं
१०. ॡं ॐ आं ह्लीं क्रों ॡं
११. एं ॐ आं ह्लीं क्रों एं
१२. ऐं ॐ आं ह्लीं क्रों ऐं
१३. ओं ॐ आं ह्लीं क्रों ओं
१४. औं ॐ आं ह्लीं क्रों औं
१५. अं ॐ आं ह्लीं क्रों अं
१६. अः ॐ आं ह्लीं क्रों अः
१७. कं ॐ आं ह्लीं क्रों कं
१८. खं ॐ आं ह्लीं क्रों खं
१९. गं ॐ आं ह्लीं क्रों गं
२०. घं ॐ आं ह्लीं क्रों घं
२१. ङं ॐ आं ह्लीं क्रों ङं
२२. चं ॐ आं ह्लीं क्रों चं
२३. छं ॐ आं ह्लीं क्रों छं
२४. जं ॐ आं ह्लीं क्रों जं
२५. झं ॐ आं ह्लीं क्रों झं
२६. ञं ॐ आं ह्लीं क्रों ञं
२७. टं ॐ आं ह्लीं क्रों टं
२८. ठं ॐ आं ह्लीं क्रों ठं
२९. डं ॐ आं ह्लीं क्रों डं
३०. ढं ॐ आं ह्लीं क्रों ढं
३१. णं ॐ आं ह्लीं क्रों णं
३२. तं ॐ आं ह्लीं क्रों तं
३३. थं ॐ आं ह्लीं क्रों थं
३४. दं ॐ आं ह्लीं क्रों दं
३५. धं ॐ आं ह्लीं क्रों धं
३६. नं ॐ आं ह्लीं क्रों नं
३७. पं ॐ आं ह्लीं क्रों पं
३८. फं ॐ आं ह्लीं क्रों फं
३९. बं ॐ आं ह्लीं क्रों बं
४०. भं ॐ आं ह्लीं क्रों भं
४१. मं ॐ आं ह्लीं क्रों मं
४२. यं ॐ आं ह्लीं क्रों यं
४३. रं ॐ आं ह्लीं क्रों रं
४४. लं ॐ आं ह्लीं क्रों लं
४५. वं ॐ आं ह्लीं क्रों वं
४६. शं ॐ आं ह्लीं क्रों शं
४७. षं ॐ आं ह्लीं क्रों षं
४८. सं ॐ आं ह्लीं क्रों सं
४९. हं ॐ आं ह्लीं क्रों हं
५०. ळं ॐ आँ ह्लीं क्रों ळं

क्षं

इसके बाद 'विलोम'-क्रम से 'ळं' से 'अं' तक (५१ से १०० तक) 'जप' करे। फिर 'अष्ट-मातृका-वर्णों' (अं-कं-चं-टं-तं-पं-यं-शं) से १०१ से १०८ तक 'जप' करे। यथा–

१०१.अं ॐ आं ह्लीं क्रों अं
१०२.कं ॐ आं ह्लीं क्रों कं
१०३.चं ॐ आं ह्लीं क्रों चं
१०४.टं ॐ आं ह्लीं क्रों टं
१०५.तं ॐ आं ह्लीं क्रों तं
१०६.पं ॐ आं ह्लीं क्रों पं
१०७.यं ॐ आं ह्लीं क्रों यं
१०८.शं ॐ आं ह्लीं क्रों शं

श्रीबगला-चतुरक्षर-मन्त्र द्वारा श्रीपीताम्बरा-आराधना

भगवती बगला के चतुरक्षर मन्त्र द्वारा श्रीपीताम्बरा की आराधना करने के लिए सबसे पहले सर्व-विद्या-आकर्षिणी पीताम्बरा भगवती का तत्त्व-मय पूजन करना चाहिए। यथा –

ॐ आं ह्लीं क्रों आत्म-तत्त्व-व्यापकाय-श्रीपीताम्बरायै श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ॐ आं ह्लीं क्रों विद्या-तत्त्व-व्यापकाय-श्रीपीताम्बरायै श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ॐ आं ह्लीं क्रों शिव-तत्त्व-व्यापकाय-श्रीपीताम्बरायै श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

फिर चतुरक्षर मन्त्र से युक्त जयान्त मातृकाओं से भगवती पीताम्बरा की जय-जयकार की भावना करनी चाहिए। पूजन हेतु जय जय पर भगवती के चित्र आदि पर पुष्पादि भी चढ़ा सकते हैं –

०१. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीबगलामुखि जय जय।
०२. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीस्तम्भिनि जय जय।
०३. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीजम्भिनि जय जय।
०४. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीमोहिनि जय जय।
०५. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीवश्ये जय जय।
०६. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीचले जय जय।
०७. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीअचले जय जय।
०८. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीदुर्द्धरे जय जय।
०९. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीअकल्मषे जय जय।
१०. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीधीरे जय जय।
११. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीकल्पने जय जय।
१२. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीकाल-कर्षिणि जय जय।
१३. ॐ आं ह्लीं क्रों श्री भ्रामिके जय जय।
१४. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीमन्द-गमने जय जय।
१५. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीभोगिनि जय जय।
१६. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीयोगिनि जय जय।
१७. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीभगाम्बे जय जय।
१८. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीभग-माले जय जय।
१९. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीभग-वाहे जय जय।
२०. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीभगोदरि जय जय।
२१. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीभगिनि जय जय।
२२. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीभग-जिह्वे जय जय।
२३. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीभगस्थे जय जय।
२४. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीभग-सर्पिणि जय जय।
२५. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीभग-लोले जय जय।
२६. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीभगाक्षि जय जय।
२७. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीशिवे जय जय।
२८. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीभग-निपातिनि जय जय।
२९. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीजये जय जय।
३०. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीविजये जय जय।
३१. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीधात्रि जय जय।
३२. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीअजिते जय जय।
३३. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीअपराजिते जय जय।
३४. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीजम्भिनि जय जय।
३५. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीस्तम्भिनि जय जय।
३६. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीमोहिनि जय जय।
३७. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीआकर्षिणि जय जय।
३८. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीउमे जय जय।
३९. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीरम्भिणि जय जय।
४०. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीजृम्भणि जय जय।
४१. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीकीलिनि जय जय।
४२. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीवशिनि जय जय।
४३. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीरम्भे जय जय।
४४. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीमाहेश्वरि जय जय।
४५. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीमङ्गले जय जय।
४६. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीरूपिणि जय जय।
४७. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीपीते जय जय।
४८. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीपीताम्बरे जय जय।
४९. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीभव्ये जय जय।
५०. ॐ आं ह्लीं क्रों श्रीसु-रूपे बहु-भाषिणि जय जय।

अन्त में चतुरक्षर-मन्त्र से सम्पुटित 'किङ्किणी-स्तोत्र' आदि का पाठ कर भगवती पीताम्बरा के चित्रादि के सम्मुख पुष्पाञ्जलि अर्पित करनी चाहिए। यथा –

॥ चतुरक्षर-मन्त्र से सम्पुटित 'किङ्किणी-स्तोत्र' ॥

॥ ॐ आं ह्लीं क्रों ॥

किं किं दुःखं सकल-जननि! क्षीयते न स्मृतायाम्। का का कीर्तिः कुल-कमलिनि प्राप्यते नार्चितायां॥
किं किं सौख्यं सुर-वर-नुते! प्राप्यते न स्तुतायाम्। कं कं योगं त्वयि न तनुते चित्तमालम्बितायाम्॥१॥

॥ ॐ आं ह्लीं क्रों ॥

॥ ॐ आं ह्लीं क्रों ॥

स्मृता भव - भय - ध्वंसि, पूजिताऽसि शुभङ्करि। स्तुता त्वं वाञ्छितं देवि!, ददासि करुणाकरे॥२॥

॥ ॐ आं ह्लीं क्रों ॥

॥ ॐ आं ह्लीं क्रों ॥

परमानन्द-बोधाद्-विरूपे! तेजः - स्वरूपिणि, देव - वृन्द - शिरो - रत्न - निघृष्ट - चरणाम्बुजे!
चिद्-विश्रान्ति-महा-सत्ता-मात्रे मात्रे! नमोऽस्तु ते॥३॥

॥ ॐ आं ह्लीं क्रों ॥

॥ ॐ आं ह्लीं क्रों ॥

सृष्टि - स्थित्युपसंहार - हेतु - भूते सनातनि!, गुण-त्रयात्मिकाऽसि त्वं, जगतः करणेच्छया॥४॥

॥ ॐ आं ह्लीं क्रों ॥

॥ ॐ आं ह्लीं क्रों ॥

अनुग्रहाय भूतानां, गृहीत - दिव्य - विग्रहे!, भक्तस्य मे नित्य-पूजा-युक्तस्य परमेश्वरि!॥५॥

॥ ॐ आं ह्लीं क्रों ॥

॥ ॐ आं ह्लीं क्रों ॥

ऐहिकामुष्मिकी सिद्धिं देहि त्रिदश-वन्दिते!, ताप-त्रय-परिम्लान-भाजनं त्राहि मां शिवे!॥६॥

॥ ॐ आं ह्लीं क्रों ॥

॥ ॐ आं ह्लीं क्रों ॥

नान्यं वदामि न शृणोमि न चिन्तयामि। नान्यं स्मरामि न भजामि न चाश्रयामि॥
त्यक्त्वा त्वदीय - चरणाम्बुजमादरेण। मां त्राहि देवि! कृपया, मयि देहि सिद्धिम् ॥७॥

॥ ॐ आं ह्लीं क्रों ॥

श्रीबगला-पञ्चाक्षर अर्थात् पाँच अक्षरों की मन्त्र-साधना

'ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट्'

।। मन्त्रोद्धार।।

प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य, स्थिर-मायां वधू ततः।
हुं फट् संयोजयेत् पश्चात्, पञ्चार्ण-बगला-मनुः।।

।। मन्त्र-माहात्म्य ।।

प्रणव 'ॐ-कार', वधू 'स्त्रीं' एवं 'हुं फट्' से युक्त स्थिर-माया 'ह्लीं' कुण्डलिनी-जागरण का विशिष्ट मन्त्र है।

।। विनियोग ।।

ॐ अस्य श्रीबगला-मुखी-पञ्चाक्षर-मन्त्रस्य श्री अक्षोभ्य ऋषि :, बृहती छन्दः, श्रीबगला-मुखी-चिन्मयी देवी देवता, हूं बीजं, फट् शक्तिः, ह्लीं स्त्रीं कीलकं, श्रीबगला-मुखी-चिन्मयी-देवी-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

।। ऋष्यादि-न्यास ।।

श्रीअक्षोभ्य-ऋषये नमः शिरसि, बृहती-छन्दसे नमः मुखे, श्रीबगला-मुखी-चिन्मयी-देवी-देवतायै नमः हृदि, हूं-बीजाय नमः गुह्ये, फट्-शक्तये नमः पादयोः, ह्लीं स्त्रीं-कीलकाय नमः सर्वाङ्गे, श्रीबगला - मुखी - चिन्मयी - देवी - प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

।। कर-न्यास ।।

ॐ ह्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ ह्लूं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ ह्लैं अनामिकाभ्यां हुम्। ॐ ह्लौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐ ह्लः करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्।

।। अङ्-न्यास ।।

ॐ ह्लां हृदयाय नमः। ॐ ह्लीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्लूं शिखायै वषट्। ॐ ह्लैं कवचाय हुम्। ॐ ह्लौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ ह्लः अस्त्राय फट्।

।। ध्यान ।।

प्रत्यालीढ-परां घोरां, मुण्ड-माला-विभूषिताम्।
खर्वां लम्बोदरीं भीमां, पीताम्बर-परिच्छदाम्।।
नव-यौवन-सम्पन्नां, पञ्च-मुद्रा-विभूषिताम्।
चतुर्भुजां ललज्जिह्वां, महा-भीमां वर-प्रदाम्।।
खड्ग-कर्त्री-समायुक्तां, सव्येतर-भुज-द्वयाम्।
कपालोत्पल-संयुक्तां, सव्य-पाणि-युगान्विताम्।।
पिङ्गोग्रैक-सुखासीनां, मौलावक्षोभ्य-भूषिताम्।
प्रज्वलत्-पितृ-भू-मध्य-गतां दंष्ट्रा-करालिनीम्।।
तां खेचरां स्मेर-वदनां, भस्मालङ्कार-भूषिताम्।
विश्व-व्यापक-तोयान्ते, पीत-पद्मोपरि-स्थिताम्।।

।। मानस-पूजन ।।

ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीबगलामुखी-चिन्मयी-देवी-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीबगलामुखी-चिन्मयी-देवी-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीबगलामुखी-चिन्मयी-देवी-प्रीतये घ्रापयामि नमः।
ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीबगलामुखी-चिन्मयी-देवी-प्रीतये दर्शयामि नमः।
ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीबगलामुखी-चिन्मयी-देवी-प्रीतये निवेदयामि नमः।
ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीबगलामुखी-चिन्मयी-देवी-प्रीतये समर्पयामि नमः।

।। मन्त्र-जप ।।

वर्ण-माला में पहले अं से ळं तक १-५० जप निम्न प्रकार करना चाहिए। फिर विलोम क्रम ळं से अं तक ५१-१०० जप करना चाहिए। अन्त में अष्ट-मातृका वर्णों से १०१-१०८ तक जप करना चाहिए—

ॐ

१. अं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् अं
२. आं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् आं
३. इं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् इं
४. ईं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् ईं
५. उं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् उं
६. ऊं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् ऊं
७. ऋं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् ऋं
८. ॠं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् ॠं
९. ऌं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् ऌं
१०. ॡं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् ॡं
११. एं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् एं
१२. ऐं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् ऐं
१३. ओं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् ओं
१४. औं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् औं
१५. अं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् अं
१६. अः ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् अः
१७. कं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् कं
१८. खं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् खं
१९. गं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् गं
२०. घं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् घं
२१. ङं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् ङं
२२. चं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् चं
२३. छं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् छं
२४. जं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् जं
२५. झं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् झं
२६. ञं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् ञं
२७. टं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् टं
२८. ठं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् ठं
२९. डं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् डं
३०. ढं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् ढं
३१. णं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् णं
३२. तं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् तं
३३. थं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् थं
३४. दं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् दं
३५. धं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् धं
३६. नं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् नं
३७. पं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् पं
३८. फं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् फं
३९. बं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् बं
४०. भं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् भं
४१. मं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् मं
४२. यं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् यं
४३. रं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् रं
४४. लं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् लं
४५. वं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् वं
४६. शं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् शं
४७. षं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् षं
४८. सं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् सं
४९. हं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् हं
५०. ळं ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् ळं

क्षं

श्रीबगला-पञ्चाक्षर-मन्त्र द्वारा श्रीपीताम्बरा-आराधना

भगवती बगला के पञ्चाक्षर मन्त्र द्वारा श्रीपीताम्बरा की आराधना करने के लिए सबसे पहले चिन्मयी पीताम्बरा भगवती का ध्यान करना चाहिए। यथा –

प्रत्यालीढ-परां घोरां, मुण्ड-माला-विभूषिताम्।
खर्वां लम्बोदरीं भीमां, पीताम्बर-परिच्छदाम्।।
नव-यौवन-सम्पन्नां, पञ्च-मुद्रा-विभूषिताम्।
चतुर्भुजां ललज्जिह्वां, महा-भीमां वर-प्रदाम्।।

उक्त प्रकार से ध्यान करने के बाद पञ्चाक्षर मन्त्र से युक्त भगवती पीताम्बरा के १०८ नामों से पूजन करना चाहिए। मानसिक पूजन हेतु १०८ मन्त्रों में निर्दिष्ट देवता के प्रति मन में नमस्कार की भावना करनी चाहिए। बाह्य पूजन हेतु प्रत्येक नमः पादुकां पूजयामि पर पुष्पादि अर्पित करना चाहिए–

०१. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री ब्रह्मास्त्र-रूपिणी देवी माता श्रीबगलामुख्यै नमः पादुकां पूजयामि।
०२. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री चिच्छक्त्यै नमः पादुकां पूजयामि।
०३. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री ज्ञान-रूपायै नमः पादुकां पूजयामि।
०४. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री ब्रह्मानन्द-प्रदायिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
०५. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री महा-विद्यायै नमः पादुकां पूजयामि।
०६. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री महा-लक्ष्म्यै नमः पादुकां पूजयामि।
०७. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
०८. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री भुवनेश्यै नमः पादुकां पूजयामि।
०९. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री जगन्मात्रे नमः पादुकां पूजयामि।
१०. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री पार्वत्यै नमः पादुकां पूजयामि।
११. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री सर्व-मङ्गलायै नमः पादुकां पूजयामि।
१२. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री ललितायै नमः पादुकां पूजयामि।
१३. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री भैरव्यै नमः पादुकां पूजयामि।
१४. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री शान्तायै नँमः पादुकां पूजयामि।
१५. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री अन्न-पूर्णायै नमः पादुकां पूजयामि।
१६. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री कुलेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
१७. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री वाराह्यै नमः पादुकां पूजयामि।
१८. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री छिन्न-मस्तायै नमः पादुकां पूजयामि।
१९. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री तारायै नमः पादुकां पूजयामि।
२०. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री काल्यै नमः पादुकां पूजयामि।
२१. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री सरस्वत्यै नमः पादुकां पूजयामि।
२२. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री जगत्-पूज्यायै नमः पादुकां पूजयामि।

२३. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री महा-मायायै नमः पादुकां पूजयामि।
२४. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री कामेश्यै नमः पादुकां पूजयामि।
२५. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री भग-मालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
२६. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री दक्ष-पुत्र्यै नमः पादुकां पूजयामि।
२७. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री शिवाङ्कस्थायै नमः पादुकां पूजयामि।
२८. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री शिव-रूपायै नमः पादुकां पूजयामि।
२९. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री शिव-प्रियायै नमः पादुकां पूजयामि।
३०. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री सर्व-सम्पत्-करी देव्यै नमः पादुकां पूजयामि।
३१. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री सर्व-लोक-वशङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
३२. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री वेद-विद्यायै नमः पादुकां पूजयामि।
३३. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री महा-पूज्यायै नमः पादुकां पूजयामि।
३४. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री भक्ताद्वेष्यै नमः पादुकां पूजयामि।
३५. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री भयङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
३६. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री स्तम्भ-रूपायै नमः पादुकां पूजयामि।
३७. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री स्तम्भिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
३८. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री दुष्ट-स्तम्भन-कारिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
३९. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री भक्त-प्रियायै नमः पादुकां पूजयामि।
४०. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री महा-भोगायै नमः पादुकां पूजयामि।
४१. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री श्रीविद्यायै नमः पादुकां पूजयामि।
४२. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री ललिताम्बिकायै नमः पादुकां पूजयामि।
४३. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री मेना-पुत्र्यै नमः पादुकां पूजयामि।
४४. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री शिवानन्दायै नमः पादुकां पूजयामि।
४५. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री मातङ्ग्यै नमः पादुकां पूजयामि।
४६. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री भुवनेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
४७. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री नारसिंह्यै नमः पादुकां पूजयामि।
४८. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री नरेन्द्रायै नमः पादुकां पूजयामि।
४९. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री नृपाराध्यायै नमः पादुकां पूजयामि।
५०. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री नरोत्तमायै नमः पादुकां पूजयामि।
५१. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री नागिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
५२. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री नाग-पुत्र्यै नमः पादुकां पूजयामि।
५३. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री नगराज-सुतायै नमः पादुकां पूजयामि।
५४. ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् श्री उमायै नमः पादुकां पूजयामि।

५५. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री पीताम्बरायै नमः पादुकां पूजयामि।
५६. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री पीत-पुष्पायै नमः पादुकां पूजयामि।
५७. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री पीत-वस्त्र-प्रियायै नमः पादुकां पूजयामि।
५८. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री शुभायै नमः पादुकां पूजयामि।
५९. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री पीत-गन्ध-प्रियायै नमः पादुकां पूजयामि।
६०. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री रामायै नमः पादुकां पूजयामि।
६१. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री पीत-रत्नार्चितायै नमः पादुकां पूजयामि।
६२. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री शिवायै नमः पादुकां पूजयामि।
६३. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री अर्द्ध-चन्द्र-धरी देव्यै नमः पादुकां पूजयामि।
६४. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री गदा-मुद्गर-धारिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
६५. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री सावित्र्यै नमः पादुकां पूजयामि।
६६. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री त्रि-पदायै नमः पादुकां पूजयामि।
६७. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री शुद्धायै नमः पादुकां पूजयामि।
६८. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री सद्यो राग-विवर्द्धिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
६९. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री विष्णु-रूपायै नमः पादुकां पूजयामि।
७०. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री जगन्मोहायै नमः पादुकां पूजयामि।
७१. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री ब्रह्म-रूपायै नमः पादुकां पूजयामि।
७२. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री हरि-प्रियायै नमः पादुकां पूजयामि।
७३. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री रुद्र-रूपायै नमः पादुकां पूजयामि।
७४. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री रुद्र-शक्त्यै नमः पादुकां पूजयामि।
७५. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री चिन्मय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
७६. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री भक्त-वत्सलायै नमः पादुकां पूजयामि।
७७. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री लोक-माता शिवायै नमः पादुकां पूजयामि।
७८. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री सन्ध्यायै नमः पादुकां पूजयामि।
७९. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री शिव-पूजन-तत्परायै नमः पादुकां पूजयामि।
८०. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री धनाध्यक्षायै नमः पादुकां पूजयामि।
८१. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री धनेश्यै नमः पादुकां पूजयामि।
८२. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री धर्मदायै नमः पादुकां पूजयामि।
८३. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री धनदायै नमः पादुकां पूजयामि।
८४. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री धनायै नमः पादुकां पूजयामि।
८५. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री चण्ड-दर्प-हरी देव्यै नमः पादुकां पूजयामि।
८६. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री शुम्भासुर-निवर्हिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
८७. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री राज-राजेश्वरी देव्यै नमः पादुकां पूजयामि।

८८. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री महिषासुर-मर्दिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
८९. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री मधु-कैटभ-हन्त्र्यै नमः पादुकां पूजयामि।
९०. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री रक्त-बीज-विनाशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
९१. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री धूम्राक्ष-दैत्य-हन्त्र्यै नमः पादुकां पूजयामि।
९२. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री चण्डासुर-विनाशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
९३. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री रेणु-पुत्र्यै नमः पादुकां पूजयामि।
९४. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री महा-मायायै नमः पादुकां पूजयामि।
९५. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री भ्रामर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
९६. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री भ्रमराम्बिकायै नमः पादुकां पूजयामि।
९७. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री ज्वाला-मुख्यै नमः पादुकां पूजयामि।
९८. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री भद्र-काल्यै नमः पादुकां पूजयामि।
९९. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री बगला शत्रु-नाशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
१००. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री इन्द्राण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
१०१. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री इन्द्र-पूज्यायै नमः पादुकां पूजयामि।
१०२. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री गुह-मात्रे नमः पादुकां पूजयामि।
१०३. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री गुणेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
१०४. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री वज्र-पाश-धरा देव्यै नमः पादुकां पूजयामि।
१०५. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री जिह्वा-धारिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
१०६. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री मुद्गर-धारिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
१०७. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री भक्तानन्द-करी देव्यै नमः पादुकां पूजयामि।
१०८. ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट् श्री बगला परमेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि।

अन्त में ब्रह्म की सह-चरी, प्रति-दिन कल्याण करनेवाली कुण्डलिनी-शक्ति-स्वरूपा माता पीताम्बरा से निम्न प्रकार से समर्पण, प्रार्थना एवं जप करना चाहिए। यथा –

॥ समर्पण ॥

ॐ गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिः भवतु मे देवि!, त्वत् - प्रसादान् पीताम्बरे!॥

॥ प्रार्थना ॥

करुणा - पूरित - चित्तां, सच्चिद्रूपां परां दिव्यां।
ब्रह्म-सह-चरीं तुर्यां बगला-शक्तिं प्रणौमि सौभाग्याम्॥

॥ जप ॥

ॐ फट् - मन्त्रायै नमः, ॐ फट् - स्वरूपिण्यै नमः, ॐ पीताम्बर - विभूषितायै नमः, ॐ तारायै नमः, ॐ खड्ग-हस्तायै नमः, ॐ खड्ग-रतायै नमः, ॐ खड्गिन्यै नमः, ॐ पञ्च-वक्त्रा-शिव-प्रियायै नमः।

★★★

श्रीबगला-अष्टाक्षर अर्थात् आठ अक्षरों की मन्त्र-साधना

'ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा'

।। मन्त्रोद्धार ।।

वेदादि विलिखेद् पूर्वं, पाश-बीजमनन्तरं।
स्तब्ध-मायां समुच्चार्य, अंकुशं बीजमेव च।
हुं फट् स्वाहा समायुक्तं, मन्त्रमष्टाक्षरं तथा।।

।। मन्त्र-माहात्म्य ।।

वेदादि अर्थात् 'ॐ-कार', पाश-बीज 'आं', अंकुश-बीज 'क्रों' एवं 'हुं फट् स्वाहा' से युक्त स्थिर-माया-बीज 'ह्लीं' नामक भगवती श्रीबगला का आठ अक्षरों का मन्त्र योग-सिद्धि एवं भगवती का सान्निध्य दिलानेवाला है।

।। विनियोग ।।

ॐ अस्य श्रीबगला-अष्टाक्षर मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, चिन्मयी विश्व-रूपिणी श्रीबगलाम्बा देवता, ॐ बीजं, ह्लीं शक्तिः, क्रों कीलकं, श्रीबगलाम्बा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

।। ऋष्यादि-न्यास ।।

श्रीब्रह्मर्षये नमः शिरसि, गायत्री-छन्दसे नमः मुखे, चिन्मयी विश्व-रूपिणी श्रीबगलाम्बा देवतायै नमः हृदि, ॐ-बीजाय नमः गुह्ये, ह्लीं-शक्तये नमः पादयोः, क्रों-कीलकाय नमः सर्वाङ्गे, श्रीबगलाम्बा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

।। कर-न्यास ।।

ॐ ह्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ ह्लूं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ ह्लैं अनामिकाभ्यां हुम्। ॐ ह्लौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐ ह्लः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

।। अङ्ग-न्यास ।।

ॐ ह्लां हृदयाय नमः। ॐ ह्लीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्लूं शिखायै वषट्। ॐ ह्लैं कवचाय हुम्। ॐ ह्लौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ ह्लः अस्त्राय फट्।

।। ध्यान ।।

युवतीं च मदोन्मत्तां, पीताम्बर-धरां शिवां।
पीत-भूषण-भूषाङ्गीं, सम-पीन-पयोधराम्।।
मदिरामोद - वदनां, प्रवाल - सदृशाधरां।
पान-पात्रं च शुद्धिं च, विभ्रतीं बगलां स्मरेत्।।

।। मानस-पूजन ।।

ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीबगलाम्बा-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीबगलाम्बा-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीबगलाम्बा-प्रीतये घ्रापयामि नमः।
ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीबगलाम्बा-प्रीतये दर्शयामि नमः।
ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीबगलाम्बा-प्रीतये निवेदयामि नमः।
ॐ स सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीबगलाम्बा-प्रीतये समर्पयामि नमः।

॥ मन्त्र-जप ॥

अष्टाक्षरी अर्थात् ८ अक्षर के मन्त्र का जप– 'ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा'। जप के लिए हरिद्रा अर्थात् हल्दी की माला प्रशस्त है। वर्ण-माला में जप निम्न प्रकार करना चाहिए –

१. अं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा अं

२. आं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा आं

३. इं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा इं

४. ईं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ईं

५. उं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा उं

६. ऊं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ऊं

७. ऋं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ऋं

८. ॠं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ॠं

९. ऌं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ऌं

१०. ॡं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ॡं

११. एं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा एं

१२. ऐं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ऐं

१३. ओं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ओं

१४. औं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा औं

१५. अं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा अं

१६. अः ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा अः

१७. कं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा कं

१८. खं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा खं

१९. गं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा गं

२०. घं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा घं

२१. ङं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ङं

२२. चं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा चं

२३. छं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा छं

२४. जं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा जं

२५. झं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा झं

२६. ञं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ञं

२७. टं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा टं

२८. ठं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ठं

२९. डं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा डं

३०. ढं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ढं

३१. णं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा णं

३२. तं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा तं

३३. थं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा थं

३४. दं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा दं

३५. धं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा धं

३६. नं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा नं

३७. पं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा पं

३८. फं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा फं

३९. बं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा बं

४०. भं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा भं

४१. मं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा मं

४२. यं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा यं

४३. रं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा रं

४४. लं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा लं

४५. वं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा वं

४६. शं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा शं

४७. षं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा षं

४८. सं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा सं

४९. हं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा हं

५०. ळं ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ळं

इसके बाद 'विलोम'-क्रम से 'ळं' से 'अं' तक (५१ से १०० तक) 'जप' करे। फिर 'अष्ट-मातृका-वर्णों' (अं-कं-चं-टं-तं-पं-यं-शं) से १०१ से १०८ तक 'जप' करना चाहिए।

श्रीबगला-अष्टाक्षर-मन्त्र द्वारा श्रीपीताम्बरा-आराधना

भगवती बगला के अष्टाक्षर मन्त्र द्वारा श्रीपीताम्बरा की आराधना करने के लिए सबसे पहले श्रीबगलाम्बा का तत्त्व-मय पूजन करना चाहिए। यथा –

ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा आत्म-तत्त्व-व्यापकाय-श्रीबगलाम्बायै श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा विद्या-तत्त्व-व्यापकाय-श्रीबगलाम्बायै श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा शिव-तत्त्व-व्यापकाय-श्रीबगलाम्बायै श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

उक्त प्रकार से पूजन करने के बाद अष्टाक्षर मन्त्र से युक्त सप्त-श्लोकी दुर्गा का पाठ प्रति-दिन निश्चित समय पर करना चाहिए–

।। ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ।।
ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि, देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय, महा - माया प्रयच्छति।।१।।
।। ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ।।

।। ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ।।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष - जन्तोः,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव - शुभां ददासि।
दारिद्र्य - दुःख - भय - हारिणि का त्वदन्या,
सर्वोपकार - करणाय सदाऽऽर्द्र - चित्ता।।२।।
।। ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ।।

।। ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ।।
ॐ सर्व-मङ्गल-मङ्गल्ये! शिवे! सर्वार्थ-साधिके!
शरण्ये! त्र्यम्बके! गौरि! नारायणि! नमोऽस्तु ते।।३।।
।। ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ।।

।। ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ।।
ॐ शरणागत - दीनार्त - परित्राण - परायणे!
सर्वस्यार्ति - हरे! देवि! नारायणि! नमोऽस्तु ते।।४।।
।। ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ।।

।। ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ।।
ॐ सर्व-स्वरूपे! सर्वेशे! सर्व-शक्ति-समन्विते!
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि! दुर्गे! देवि! नमोऽस्तु ते।।५।।
।। ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ।।

।। ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ।।

ॐ रोगानशेषानपहंसि तुष्टा, रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणाम् , त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।६।।

।। ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ।।

।। ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ।।

ॐ सर्वा-बाधा-प्रशमनं, त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि!।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद् - वैरि - विनाशनम् ।।७।।

।। ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ।।

उक्त प्रकार से अष्टाक्षर-मन्त्र से सम्पुटित सप्त-श्लोकी दुर्गा का पाठ करने के बाद ब्रह्म-शक्ति श्रीबगलाम्बा से निम्न प्रकार प्रार्थना कर उनको प्रणाम करना चाहिए–

।। प्रार्थना ।।

ॐ ब्राह्मि! ब्रह्म-स्वरूपे! त्वं, मां प्रसीद सनातनि!।
परमात्म-स्वरूपे! च, परमानन्द-रूपिणि!।।१।।
ॐ प्रकृत्यै नमो भद्रे!, मां प्रसीद भवार्णवे! ।
सर्व-मङ्गल-रूपे! च, प्रसीद सर्व - मङ्गले!।।२।।
ॐ विजये! शिवदे! देवि!, मां प्रसीद जय-प्रदे!।
वेद-वेदाङ्ग-रूपे! च, वेद-मातः! प्रसीद मे।।३।।
ॐ शोकघ्ने! ज्ञान-रूपे! च, प्रसीद भक्त-वत्सले!।
सर्व-सम्पत्-प्रदे! माये!, प्रसीद जगदम्बिके!।।४।।
ॐ समस्त-कामिनी-रूपे!, कलांशेन प्रसीद मे।
सर्व-सम्पत्-स्वरूपे! त्वं, प्रसीद सम्पदां प्रदे!।।५।।
ॐ यशस्विभिः पूजिते त्वं, प्रसीद यशसां निधेः!।
चराचर-स्वरूपे! च, प्रसीद मम मा चिरम् ।।६।।
ॐ मम योग - प्रदे देवि!, प्रसीद सिद्ध - योगिनि!।
सर्व-सिद्धि-स्वरूपे! च, प्रसीद सिद्धि-दायिनि!।।७।।

।। प्रणाम ।।

ॐ ब्रह्म-स्थितायै नमः, ॐ ब्रह्म-रूपायै नमः, ॐ ब्रह्मणायै नमः, ॐ ब्रह्मोद्-भवायै नमः, ॐ ब्रह्म-कलायै नमः, ॐ ब्रह्माण्यै नमः, ॐ ब्रह्म-बोधिन्यै नमः, ॐ ब्रह्म-कर्म-परायणायै नमः, ॐ महा-मायायै नमः, ॐ सर्व-मङ्गल-कारिण्यै नमः, ॐ दुर्गायै नमः, ॐ दुर्ग-परा-देव्यै नमः, ॐ सर्व-मोक्ष-प्रदा-देव्यै नमः, ॐ सर्व-भोग-प्रदायिन्यै नमः, ॐ सर्व-शक्ति-प्रदायिन्यै नमः, ॐ सर्वानन्द-प्रदा-देव्यै नमः, ॐ सर्व-लोक-प्रणेत्र्यै नमः, ॐ सर्व - रोग - हरायै नमः, ॐ सर्व-कल्याण-कारिण्यै नमः, ॐ दुर्गा-शिवायै नमः।

श्रीबगला-एकादशक्षर अर्थात् ग्यारह अक्षरों की साधना

'ॐ ह्लीं क्लीं ह्रीं बगला-मुखि! स्वाहा'

।। मन्त्रोद्धार ।।

प्रणवं स्थिर-मायां च, काम-शक्ति-युतां क्रमात्।
बगला - मुखि! संयुज्य, ठ - द्वयेन युतां स्मरेत्।।

।। मन्त्र-माहात्म्य ।।

प्रणव 'ॐ-कार', काम-बीज 'क्लीं', शक्ति-बीज 'ह्रीं' एवं भगवती बगला के सम्बोधन तथा तादात्म्य से युक्त स्थिर-माया-बीज 'ह्लीं' नामक श्रीबगलामुखी का एकादशाक्षर मन्त्र योग-सिद्धि एवं भगवती का सान्निध्य प्रदान करनेवाला विशेष मन्त्र है। इस मन्त्र का ऋष्यादि-विवरण प्राप्त नहीं है। एकाक्षर मन्त्र के समान ऋष्यादि-न्यास कर सकते हैं। वर्ण-माला में इसके जप का विशेष महत्त्व है क्योंकि इसके द्वारा शीघ्र ही माता बगला की कृपा की प्राप्ति का दिव्य अनुभव होने लगता है। वर्ण-माला में जप निम्न प्रकार करना चाहिए–

ॐ

०१. अं ॐ ह्लीं क्लीं ह्रीं बगला-मुखि! स्वाहा अं
०२. आं ॐ ह्लीं क्लीं ह्रीं बगला-मुखि! स्वाहा आं
०३. इं ॐ ह्लीं क्लीं ह्रीं बगला-मुखि! स्वाहा इं
०४. ईं ॐ ह्लीं क्लीं ह्रीं बगला-मुखि! स्वाहा ईं
०५. उं ॐ ह्लीं क्लीं ह्रीं बगला-मुखि! स्वाहा उं
०६. ऊं ॐ ह्लीं क्लीं ह्रीं बगला-मुखि! स्वाहा ऊं
०७. ऋं ॐ ह्लीं क्लीं ह्रीं बगला-मुखि! स्वाहा ऋं
०८. ॠं ॐ ह्लीं क्लीं ह्रीं बगला-मुखि! स्वाहा ॠं
०९. ऌं ॐ ह्लीं क्लीं ह्रीं बगला-मुखि! स्वाहा ऌं
१०. ॡं ॐ ह्लीं क्लीं ह्रीं बगला-मुखि! स्वाहा ॡं
११. एं ॐ ह्लीं क्लीं ह्रीं बगला-मुखि! स्वाहा एं
१२. ऐं ॐ ह्लीं क्लीं ह्रीं बगला-मुखि! स्वाहा ऐं
१३. ओं ॐ ह्लीं क्लीं ह्रीं बगला-मुखि! स्वाहा ओं
१४. औं ॐ ह्लीं क्लीं ह्रीं बगला-मुखि! स्वाहा औं
१५. अं ॐ ह्लीं क्लीं ह्रीं बगला-मुखि! स्वाहा अं
१६. अः ॐ ह्लीं क्लीं ह्रीं बगला-मुखि! स्वाहा अः
१७. कं ॐ ह्लीं क्लीं ह्रीं बगला-मुखि! स्वाहा कं
१८. खं ॐ ह्लीं क्लीं ह्रीं बगला-मुखि! स्वाहा खं
१९. गं ॐ ह्लीं क्लीं ह्रीं बगला-मुखि! स्वाहा गं
२०. घं ॐ ह्लीं क्लीं ह्रीं बगला-मुखि! स्वाहा घं

२१. ङं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा ङं
२२. चं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा चं
२३. छं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा छं
२४. जं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा जं
२५. झं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा झं
२६. ञं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा ञं
२७. टं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा टं
२८. ठं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा ठं
२९. डं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा डं
३०. ढं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा ढं
३१. णं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा णं
३२. तं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा तं
३३. थं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा थं
३४. दं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा दं
३५. धं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा धं
३६. नं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा नं
३७. पं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा पं
३८. फं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा फं
३९. बं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा बं
४०. भं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा भं
४१. मं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा मं
४२. यं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा यं
४३. रं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा रं
४४. लं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा लं
४५. वं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा वं
४६. शं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा शं
४७. षं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा षं
४८. सं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा सं
४९. हं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा हं
५०. ळं ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगला-मुखि! स्वाहा ळं

इसके बाद 'विलोम'-क्रम से 'ळं' से 'अं' तक (५१ से १०० तक) 'जप' करे। फिर 'अष्ट-मातृका-वर्णों' (अं-कं-चं-टं-तं-पं-यं-शं) से १०१ से १०८ तक 'जप' करना चाहिए।

★ ★ ★

श्रीबगला-एकादशाक्षर-मन्त्र द्वारा श्रीपीताम्बरा-आराधना

भगवती बगला के एकादशाक्षर मन्त्र द्वारा श्रीपीताम्बरा की आराधना करने के लिए सबसे पहले एकादशाक्षर-मन्त्र से तत्त्व-मय पूजन करना चाहिए। यथा –

ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा आत्मतत्त्व-व्यापकाय-श्रीपीताम्बरायै श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा विद्यातत्त्व-व्यापकाय-श्रीपीताम्बरायै श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलमुखि स्वाहा शिवतत्त्व-व्यापकाय-श्रीपीताम्बरायै श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

उक्त प्रकार से पूजन करने के बाद एकादशाक्षर मन्त्र से युक्त त्रयोदश-श्लोकी दुर्गा का पाठ प्रति-दिन निश्चित समय पर करना चाहिए–

।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।

यच्च किञ्चित् क्वचिद्-वस्तु, सदसद् वाऽखिलात्मिके!
तस्य सर्वस्य या शक्तिः, सा त्वं किं स्तूयसे तदा।।१।।

।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।

।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।

सम्मानिता ननादोच्चैः, साट्टहासं मुहुर्मुहुः।
तस्या नादेन घोरेण, कृत्स्नमापूरितं नभः।।२।।

।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।

।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।

अर्ध-निष्क्रान्त एवासौ, युध्यमानो महाऽसुरः।
तया महाऽसिना देव्या, शिरश्छित्वा निपातितः।।३।।

।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।

।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।

दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष - जन्तोः,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव - शुभां ददासि।
दारिद्र्य - दुःख - भय - हारिणि! का त्वदन्या,
सर्वोपकार - करणाय सदाऽऽर्द्र - चित्ता।।४।।

।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।

।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।

यो मां जयति संग्रामे, यो मे दर्पं व्यपोहति।
यो मे प्रति-बलो लोके, स मे भर्ता भविष्यति।।५।।

।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।

।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।

इत्युक्त्वा सोऽभ्यधावत् तामसुरो धूम्र - लोचनः।
हुंकारेणैव तं भस्म, सा चकाराम्बिका ततः।।६।।

।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।

।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।

भ्रुकुटी-कुटिलात् तस्याः, ललाट-फलकाद् द्रुतम् ।
काली कराल-वदना, विनिष्क्रान्ताऽसि-पाशिनी।।७।।

।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।
।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।

ब्रह्मेश-गुह-विष्णूनां, तथेन्द्रस्य च शक्तयः।
शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य, तद्-रूपैश्चण्डिकां ययुः।।८।।

।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।
।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।

तस्य निष्क्रामतो देवी, प्रहस्य स्वनवत् ततः।
शिरश्चिच्छेद खड्गेन, ततोऽसावपतद् भुवि।।९।।

।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।
।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।

एकैवाऽहं जगत्यत्र, द्वितीया का ममापरा?
पश्यैता दुष्ट! मय्येव, विशन्त्यो मद्-विभूतयः।।१०।।

।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।
।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।

सर्व-स्वरूपे! सर्वेशे!, सर्व-शक्ति-समन्विते!
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि!, दुर्गे देवि! नमोऽस्तु ते।।११।।

।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।
।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।

मधु-कैटभ-नाशं च, महिषासुर - घातनम् ।
कीर्तयिष्यन्ति ये तद्-वद्, वधं शुम्भ-निशुम्भयोः।।१२।।

।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।
।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।

यत् प्रार्थ्यते त्वया भूप!, त्वया च कुल-नन्दन!
मत्तस्तत् प्राप्यतां सर्वं, परितुष्टा ददामि तत् ।।१३।।

।। ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि स्वाहा ।।

उक्त प्रकार से सम्पुटित त्रयोदश-श्लोकी दुर्गा का पाठ करते समय भावना यह करनी चाहिए कि हमारी (१-५) पाँचों ज्ञानेन्द्रियों, (६-१०) पाँचों कर्मेन्द्रियों, (११) मन, (१२) बुद्धि व (१३) चित्त शुद्ध हों, हमें विशुद्ध देह की प्राप्ति हो तथा महा-मायिक-जगत् में स्थिति होकर हमें विशुद्ध भगवद् - भाव की प्राप्ति हो।

★ ★ ★

श्रीबगला-षट्-त्रिंशदक्षर अर्थात् छत्तीस अक्षरों की साधना

(मन्त्र-महोदधि के अनुसार)

॥ मन्त्रोद्धार ॥

'मन्त्र-महोदधि' में भगवती बगलामुखी के छत्तीस अक्षर के मन्त्र का मन्त्रोद्धार निम्न प्रकार दिया है–

अथ प्रवक्ष्ये शत्रूणां, स्तम्भिनी बगला-मुखी। प्रणवो गगनं पृथ्वी, शान्ति-विन्दु-युतं बग-लामु साक्षो गदी सर्व-दुष्टानां वा हलीन्दु-युक्। मुखं-पदं स्तम्भयान्ते, जिह्वां कीलय-वर्णकाः।। बुद्धिं विनाशयान्ते तु, बीजं तारोऽग्नि-सुन्दरी। षट्-त्रिंशदक्षरो मन्त्रो, नारद-मुनिरस्य तु।।

अर्थात् अब शत्रुओं का स्तम्भन करनेवाली बगलामुखी को कहूँगा– प्रणव : 'ॐ', शान्ति (ी) एवं बिन्दु (.) सहित गगन (ह) एवं पृथ्वी (ल) : ह्लीं, फिर 'बगलामु' और साक्ष (ि) गदी (ख) : बगलामुखि, तब 'सर्व-दुष्टानां वा' और इन्द्र (.) से युक्त हली (च) : सर्व-दुष्टानां वाचं, फिर 'मुखं पदं स्तम्भय', उसके बाद 'जिह्वां कीलय'– ये अक्षर, उसके बाद 'बुद्धिं विनाशय', तब बीज : ह्लीं, तार : ॐ, अग्नि-सुन्दरी : स्वाहा– यह ३६ अक्षरों का मन्त्र है। इसके मुनि नारद हैं।

उक्त उद्धार के अनुसार पूरा मन्त्र यह है–

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

॥ विनियोग ॥

ॐ अस्य श्रीबगला-मुखी-मन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः, बृहती छन्दः, बगला-मुखी देवता, शत्रूणां स्तम्भनार्थे (ममाभीष्ट-सिद्धये वा) जपे विनियोगः।

॥ ऋष्यादि-न्यास ॥

श्रीनारद-ऋषये नमः शिरसि, बृहती-छन्दसे नमः मुखे, श्रीबगला-मुखी-देवतायै नमः हृदि, शत्रूणां स्तम्भनार्थे (ममाभीष्ट-सिद्धये वा) जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

॥ कर-न्यास ॥

ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। बगला-मुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा। सर्व-दुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्। वाचं मुखं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुम्। जिह्वां कीलय कनिष्ठाभ्यां वौषट्। बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

॥ अङ्ग-न्यास ॥

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः। बगला-मुखि शिरसे स्वाहा। सर्व-दुष्टानां शिखायै वषट्। वाचं मुखं स्तम्भय कवचाय हुम्। जिह्वां कीलय नेत्र-त्रयाय वौषट्। बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

॥ ध्यान ॥

सौवर्णासन-संस्थितां त्रि-नयनां पीतांशुकोल्लासिनीम्,
हेमाभाङ्ग - रुचिं शशाङ्क-मुकुटां सच्चम्पक-स्रग्-युताम्।।

हस्तैर्मुद्गर - पाश - वज्र - रसनाः सम्बिभ्रतीं भूषणैः,
व्याप्ताङ्गीं बगला-मुखीं त्रि-जगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्।।

।। मानस-पूजन ।।

ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये घ्रापयामि नमः।
ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये दर्शयामि नमः।
ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये निवेदयामि नमः।
ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये समर्पयामि नमः।

।। मन्त्र-जप ।।

'मन्त्र-महोदधि' के अनुसार षट्-त्रिंशदक्षरी अर्थात् ३६ अक्षर के मन्त्र का जप– 'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'। जप के लिए हरिद्रा अर्थात् हल्दी की माला प्रशस्त है। वर्ण-माला में जप निम्न प्रकार करना चाहिए –

१. अं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा अं
२. आं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा आं
३. इं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा इं
४. ईं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा ईं
५. उं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा उं
६. ऊं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा ऊं
७. ऋं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा ऋं
८. ॠं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा ॠं
९. ऌं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा ऌं

१०. लॄं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा लॄं
११. एं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा एं
१२. ऐं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा ऐं
१३. ओं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा ओं
१४. औं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा औं
१५. अं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा अं
१६. अः ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा अः
१७. कं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा कं
१८. खं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा खं
१९. गं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा गं
२०. घं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा घं
२१. ङं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा ङं
२२. चं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा चं
२३. छं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा छं
२४. जं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा जं
२५. झं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा झं
२६. ञं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा ञं

२७. टं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा टं

२८. ठं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा ठं

२९. डं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा डं

३०. ढं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा ढं

३१. णं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा णं

३२. तं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा तं

३३. थं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा थं

३४. दं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा दं

३५. धं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा धं

३६. नं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा नं

३७. पं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा पं

३८. फं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा फं

३९. बं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा बं

४०. भं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा भं

४१. मं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा मं

४२. यं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा यं

४३. रं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा रं

४४. लं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा लं
४५. वं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा वं
४६. शं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा शं
४७. षं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा षं
४८. सं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा सं
४९. हं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा हं
५०. ळं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा ळं

इसके बाद 'विलोम'-क्रम से 'ळं' से 'अं' तक (५१ से १०० तक) 'जप' करे। फिर 'अष्ट-मातृका-वर्णों' (अं-कं-चं-टं-तं-पं-यं-शं) से १०१ से १०८ तक 'जप' करे। यथा-

१०१. अं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा अं
१०२. कं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा कं
१०३. चं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा चं
१०४. टं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा टं
१०५. तं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा तं
१०६. पं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा पं
१०७. यं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा यं
१०८. शं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा शं

श्रीबगला-षट्-त्रिंशदक्षर अर्थात् छत्तीस अक्षरों की साधना

(शाक्त-प्रमोद के अनुसार)

'शाक्त-प्रमोद' में भगवती बगलामुखी के छत्तीस अक्षर के मन्त्र का मन्त्रोद्धार निम्न प्रकार दिया गया है-

प्रणवं स्थिर-मायां, ततश्च बगला-मुखि!। तदन्ते सर्व-दुष्टानां, ततो वाचं मुखं पदम्।।
स्तम्भयेति ततो जिह्वां, कीलयेति पद-द्वयम्। बुद्धिं नाशय पश्चात् तु, स्थिर-मायां समालिखेत्।।
लिखेच्च पुनरोङ्कारं, स्वाहेति पदमन्ततः। षट्-त्रिंशदक्षरी विद्या, सर्व-सम्पत्ति - करी मता।।

उक्त उद्धार के अनुसार ३६ अक्षरों की यह विद्या सर्व-सम्पत्ति की देनेवाली है। विद्या (मन्त्र) का स्वरूप निम्न प्रकार बनता है-

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

।। विनियोग ।।

ॐ अस्य श्रीबगला-मुखी-मन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्रीबगला-मुखी देवता, ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ममाखिलावाप्तये जपे विनियोगः।

।। ऋष्यादि-न्यास ।।

श्रीनारद-ऋषये नमः शिरसि, त्रिष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे, श्रीबगला-मुखी-देवतायै नमः हृदि, ह्लीं-बीजाय नमः गुह्ये, स्वाहा-शक्तये नमः पादयोः, ममाखिलावाप्तये जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

।। कर-न्यास ।।

ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। बगला-मुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा। सर्व-दुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्। वाचं मुखं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुम्। जिह्वां कीलय कीलय कनिष्ठाभ्यां वौषट्। बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

।। अङ्ग-न्यास ।।

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः। बगला-मुखि शिरसे स्वाहा। सर्व-दुष्टानां शिखायै वषट्। वाचं मुखं स्तम्भय कवचाय हुम्। जिह्वां कीलय कीलय नेत्र-त्रयाय वौषट्। बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

।। व्यापक-न्यास ।।

१. ॐ मूर्ध्नि, २. ह्लीं भाले, ३-४. बग दृशोः, ५-६. ला-मु श्रोत्रे, ७-८. खि-स गण्डयोः, ९-१०. र्व-दु नासयोः, ११-१२. ष्टा-नां ओष्ठयोः, १३. वा मुख-वृत्ते, १४. चं दक्षिणांसे, १५. मु दक्षिण-कूपरे, १६. खं दक्ष-मणि-बन्धे, १७. स्त दक्ष-अङ्गुलेर्मूले, १८. म्भ गले, १९-२०. य-जि कुचयोः, २१. ह्वां हृदि, २२. की नाभौ, २३. ल कटयां, २४. य गुह्य-देशे, २५. की वामांसे, २६. ल वाम-कूपरे, २७. य वाम-मणि-बन्धे, २८. बु वाम-अङ्गुलेर्मूले, २९-३०. द्धिं-ना दक्ष-वामे उर्वोः, ३१-३२. शय दक्ष-वामे जान्वोः, ३३-३४. ह्लीं ॐ दक्ष-वाम-गुल्फयोः, ३५-३६. स्वाहा दक्ष-वाम-अंगुलि-मूलयोः।

॥ ध्यान ॥

मध्ये सुधाब्धि-मणि-मण्डप-रत्न-वेद्यां-सिंहासनोपरि-गतां परि-पीत-वर्णाम्।
पीताम्बराभरण-माल्य-विभूषिताङ्गीं, देवीं नमामि धृत-मुद्गर-वैरि-जिह्वाम्।।१।।
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम्।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्वि-भुजां नमामि।।२।।

॥ मानस-पूजन ॥

ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये घ्रापयामि नमः।
ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये दर्शयामि नमः।
ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये निवेदयामि नमः।
ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये समर्पयामि नमः।

॥ मन्त्र-जप ॥

'शाक्त-प्रमोद' के अनुसार षट्-त्रिंशदक्षरी अर्थात् ३६ अक्षर के मन्त्र का जप- 'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'। जप के लिए हरिद्रा अर्थात् हल्दी की माला प्रशस्त है। वर्ण-माला में जप निम्न प्रकार करना चाहिए –

ॐ

०१. अं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा अं

०२. आं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा आं

०३. इं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा इं

०४. ईं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा ईं

०५. उं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा उं

०६. ऊं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा ऊं

०७. ऋं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा ऋं

०८. ॠं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सव-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा ॠं

०९. लृं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा लृं

१०. लॄं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा लॄं

११.एं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा एं

१२. ऐं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा ऐं

१३. ओं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा ओं

१४. औं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा औं

१५. अं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा अं

१६. अः ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा अः

१७. कं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा कं

१८. खं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा खं

१९. गं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा गं

२०. घं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा घं

२१. ङं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा ङं

२२. चं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा चं

२३. छं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा छं

२४. जं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा जं

२५. झं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा झं

२६. ञं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा ञं
२७. टं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा टं
२८. ठं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा ठं
२९. डं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा डं
३०. ढं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा ढं
३१. णं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा णं
३२. तं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा तं
३३. थं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा थं
३४. दं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा दं
३५. धं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा धं
३६. नं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा नं
३७. पं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा पं
३८. फं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा फं
३९. बं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा बं
४०. भं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा भं
४१. मं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा मं
४२. यं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा यं

४३. रं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा रं
४४. लं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा लं
४५. वं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा वं
४६. शं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा शं
४७. षं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा षं
४८. सं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा सं
४९. हं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा हं
५०. ळं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा ळं

इसके बाद 'विलोम'-क्रम से 'ळं' से 'अं' तक (५१ से १०० तक) 'जप' करे। फिर 'अष्ट-मातृका-वर्णों' (अं-कं-चं-टं-तं-पं-यं-शं) से १०१ से १०८ तक 'जप' करे। यथा-

१०१. अं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा अं
१०२. कं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा कं
१०३. चं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा चं
१०४. टं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा टं
१०५. तं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा तं
१०६. पं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा पं
१०७. यं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा यं
१०८. शं ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा शं

'शाक्त-प्रमोद' के अनुसार यथा-शक्ति 'जप' करने के बाद चम्पा के फूलों से होम करना चाहिए।

श्रीबगला-षट्-त्रिंशदक्षर अथवा छत्तीस अक्षरों की साधना

(मन्त्र-महार्णव के अनुसार)

'मन्त्र-महार्णव' में भगवती बगलामुखी के छत्तीस अक्षर के मन्त्र का मन्त्रोद्धार को न देकर मन्त्र-महोदधि में दिए गए मन्त्र ('ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा') को ही उद्धृत कर दिया है। विशेषता यह है कि उसमें 'पटल' दिया है। जिससे मन्त्र की विशेष महिमा ज्ञात होती है। यथा–

अथ प्रवक्ष्ये शत्रूणां, स्तम्भिनीं बगला-मुखीम्। साधकानां हितार्थाय, स्तम्भनाय च वैरिणाम्।।
ब्रह्मास्त्रं च प्रवक्ष्यामि, सद्यः प्रत्यय-कारणम्। यस्य स्मरण - मात्रेण, पवनोऽपि स्थिरायते।।

अर्थात् बगलामुखी शत्रुओं का स्तम्भन करनेवाली, साधकों की कल्याण-कारिणी और 'ब्रह्मास्त्र-स्वरूपा' हैं। तुरन्त फल देनेवाली हैं। उनका स्मरण करने भर से वायु भी स्थिर हो जाता है।

।। विनियोग ।।

ॐ अस्य श्रीबगला-मुखी-मन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः, बृहती छन्दः, श्रीबगला-मुखी देवता, ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ममाखिलावाप्तये जपे विनियोगः।

।। ऋष्यादि-न्यास ।।

श्रीनारद-ऋषये नमः शिरसि, बृहती-छन्दसे नमः मुखे, श्रीबगला-मुखी-देवतायै नमः हृदि, ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये, स्वाहा-शक्तये नमः पादयोः, ममाखिलावाप्तये जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

।। कर-न्यास ।।

ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। बगला-मुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा। सर्व-दुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्। वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुम्। जिह्वां कीलय कनिष्ठाभ्यां वौषट्। बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

।। अङ्ग-न्यास ।।

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः। बगला-मुखि शिरसे स्वाहा। सर्व-दुष्टानां शिखायै वषट्। वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्। जिह्वां कीलय नेत्र-त्रयाय वौषट्। बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

।। व्यापक-न्यास ।।

ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा आत्म-तत्त्व-व्यापिनीं श्रीबगला-मुखी-श्रीपादुकां पूजयामि–मूलाधारे।

ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा विद्या-तत्त्व-व्यापिनीं श्रीबगला-मुखी-श्रीपादुकां पूजयामि–हृदये।

ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा शिव-तत्त्व-व्यापिनीं श्रीबगला-मुखी-श्रीपादुकां पूजयामि–शिरसि।

ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा सर्व-तत्त्व-व्यापिनीं श्रीबगला-मुखी-श्रीपादुकां पूजयामि–सर्वाङ्गे।

॥ ध्यान ॥

सौवर्णासन-संस्थितां त्रि-नयनां पीतांशुकोल्लासिनीम्,
हेमाभाङ्ग - रुचिं शशाङ्क-मुकुटां सच्चम्पक-स्रग्-युताम्।।
हस्तैर्मुद्गर - पाश - वज्र - रशनाः सम्बिभ्रतीं भूषणै-
र्व्याप्ताङ्गीं बगला-मुखीं त्रि-जगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्।। १।।

अर्थात् सुवर्ण के आसन पर स्थित, तीन नेत्रोंवाली, पीताम्बरा से उल्लसित, सुवर्ण की भाँति कान्तिमय अङ्गोंवाली, जिनके मणि-मय मुकुट में चन्द्र चमक रहा है, कण्ठ में सुन्दर चम्पा पुष्प की माला शोभित है, जो अपने चार हाथों में- १. गदा, २. पाश, ३. वज्र और ४. शत्रु की जीभ धारण किए हैं, दिव्य आभूषणों से जिनका पूरा शरीर भरा हुआ है- ऐसी तीनों लोकों का स्तम्भन करनेवाली श्रीबगला-मुखी की मैं चिन्ता करता हूँ।

मध्ये सुधाब्धि-मणि-मण्डप-रत्न-वेद्यां-सिंहासनोपरि-गतां परि-पीत-वर्णाम् ।
पीताम्बराभरण-माल्य-विभूषिताङ्गीं, देवीं नमामि धृत-मुद्गर-वैरि-जिह्वाम्।।२।।

अर्थात् सुधा-सागर में मणि-निर्मित मण्डप बना हुआ है और उसके मध्य में रत्नों की बनी हुई चौकोर वेदिका में सिंहासन सजा हुआ है, उसके मध्य में पीले रङ्ग के वस्त्र और आभूषण तथा पुष्पों से सजी हुई श्री भगवती बगला-मुखी को मैं प्रणाम करता हूँ।

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रुं परिपीडयन्तीम्।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्वि-भुजां नमामि।।३।।

भगवती पीताम्बरा के दो हाथ हैं, बाएँ से शत्रु की जिह्वा को बाहर खींचकर दाहिने हाथ में धारण किए हुए मुद्गर से उसको पीड़ित कर रही हैं।

॥ मानस-पूजन ॥

ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये घ्रापयामि नमः।
ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये दर्शयामि नमः।
ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये निवेदयामि नमः।
ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये समर्पयामि नमः।

॥ मन्त्र-जप ॥

'मन्त्र-महार्णव' के अनुसार **षट्-त्रिंशदक्षरी अर्थात् ३६ अक्षर** के मन्त्र का जप- **'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'**। जप के लिए **हरिद्रा अर्थात्** हल्दी की माला प्रशस्त है। **वर्ण-माला** में जप का विवरण पीछे दिया जा चुका है।

श्रीबगला-षट्-त्रिंशदक्षर अथवा छत्तीस अक्षरों की साधना

(सांख्यायन तन्त्र के अनुसार)

'सांख्यायन तन्त्र' में भगवती बगलामुखी के छत्तीस अक्षर के मन्त्र का मन्त्रोद्धार इस प्रकार दिया गया है–

तारं च बगला - बीजं, बगला - पदमुच्चरेत् मुखीति पदमुच्चार्य, सर्व-शब्दं ततोच्चरेत् ।।
दुष्टानां पदमुच्चार्य, वाचं मुखं पदं वदेत्। स्तम्भयेति पदं चोक्त्वा, जिह्वां कीलय उच्चरेत् ।।
बुद्धि-शब्दं ततोच्चार्य, विनाशय ततो वदेत्। स्थिर-मायां ततोच्चार्य, प्रणवं च ततोच्चरेत् ।।
वह्नि - जायां समुच्चार्य, एवं मन्त्रं समुद्धरेत् । षट्-त्रिंशदक्षरं मन्त्रं, मन्त्र-राजमिदं भुवि।।

उक्त उद्धार के अनुसार भी मन्त्र का वही स्वरूप बनता है, जो पीछे 'मन्त्र-महोदधि' में बताया है–

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

।। विनियोग ।।

ॐ अस्य श्रीबगला-मुखी-मन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः, बृहती छन्दः, श्रीबगला-मुखी देवता, लं बीजं, ह्लीं शक्तिः, रं कीलकं, शत्रूणां स्तम्भनार्थं जपे विनियोगः।

।। ऋष्यादि-न्यास ।।

श्रीनारद-ऋषये नमः शिरसि, बृहती-छन्दसे नमः मुखे, श्रीबगला-मुखी-देवतायै नमः हृदि, लं बीजाय नमः गुह्ये, ह्लीं-शक्तये नमः नाभौ, रं कीलकाय नमः पादयोः, शत्रूणां स्तम्भनार्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

।। अङ्ग-न्यास ।।

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः। ॐ ह्लीं बगला-मुखि शिरसे स्वाहा। ॐ ह्लीं सर्व-दुष्टानां शिखायै वषट्। ॐ ह्लीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्। ॐ ह्लीं जिह्वां कीलय नेत्र - त्रयाय वौषट्। ॐ ह्लीं बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

।। श्रीबगला-मातृका-न्यास ।।

०१. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्लीं अं श्रीबगलामुख्यै नमः ललाटे। ०२. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्लीं आं श्रीस्तम्भिन्यै नमः मुखे। ०३. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्लीं इं श्रीजम्भिन्यै नमः दक्ष नेत्रे। ०४. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्लीं ईं श्रीमोहिन्यै नमः वाम नेत्रे । ०५. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्लीं उं श्रीवश्यायै नमः दक्ष कर्णे। ०६. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्लीं ऊं श्रीचलायै नमः वाम कर्णे। ०७. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्लीं ऋं श्रीअचलायै नमः दक्ष नासा-पुटे। ०८. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्लीं ॠं श्रीदुर्द्धरायै नमः वाम नासा-पुटे। ०९. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्लीं ऌं श्रीअकल्मषायै नमः दक्ष गण्डे। १०. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्लीं ॡं श्रीधीरायै नमः वाम गण्डे। ११. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्लीं एं श्रीकल्पनायै नमः ओष्ठे। १२. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्लीं ऐं श्रीकाल-कर्षिण्यै नमः अधरे। १३. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्लीं ओं श्रीभ्रामिकायै नमः ऊर्ध्व दन्ते। १४. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्लीं औं श्रीमन्द-गमनायै नमः अधो दन्ते। १५. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्लीं अं श्रीभोगिन्यै नमः मूर्ध्नि। १६. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्लीं अः श्रीयोगिन्यै नमः जिह्वाग्रे।

१७. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं कं श्रीभगाम्बायै नमः दक्ष बाहु-मूले। १८. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं खं श्रीभग-मालायै नमः दक्ष बाहु-कूर्परे। १९. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं गं श्रीभग-वाहायै नमः दक्ष मणि-बन्धे। २०. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं घं श्रीभगोदर्यै नमः दक्षाङ्गुलि-मूलेषु। २१. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं ङं श्रीभगिन्यै नमः दक्षाङ्गुल्यग्रेषु।

२२. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं चं श्रीभग-जिह्वायै नमः वाम बाहु-मूले। २३. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं छं श्रीभगस्थायै नमः वाम बाहु-कूर्परे। २४. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं जं श्रीभग-सर्पिण्यै नमः वाम मणि-बन्धे। २५. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं झं श्रीभग-लोलायै नमः वाम अङ्गुलि-मूलेषु। २६. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं ञं श्रीभगाक्ष्यै नमः वाम अङ्गुलि-अग्रेषु।

२७. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं टं श्रीशिवायै नमः दक्ष पाद-मूले। २८. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं ठं श्रीभग-निपातिन्यै नमः दक्ष पाद-जानुनि। २९. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं डं श्रीजयायै नमः दक्ष पाद-गुल्फे। ३०. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं ढं श्रीविजयायै नमः दक्ष पाद-अङ्गुलि-मूलेषु। ३१. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं णं श्रीधात्र्यैः नमः दक्ष पाद-अङ्गुलि-अग्रेषु।

३२. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं तं श्रीअजितायै नमः वाम पाद-मूले। ३३. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं थं श्रीअपराजितायै नमः वाम पाद-जानुनि। ३४. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं दं श्रीजम्भिन्यै नमः वाम पाद-गुल्फे। ३५. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं धं श्रीस्तम्भिन्यै नमः वाम पाद-अङ्गुलि-मूलेषु। ३६. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं नं श्रीमोहिन्यै नमः वाम पाद-अङ्गुलि-अग्रेषु।

३७. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं पं श्रीआकर्षिण्यै नमः दक्ष पार्श्वे। ३८. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं फं श्रीउमायै नमः वाम पार्श्वे। ३९. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं बं श्रीरम्भिण्यै नमः पृष्ठे। ४०. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं भं श्रीजृम्भण्यै नमः नाभौ। ४१. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं मं श्रीकीलिन्यै नमः उदरे।

४२. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं यं श्रीवशिन्यै नमः हृदये। ४३. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं रं श्रीरम्भायै नमः दक्षांसे। ४४. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं लं श्रीमाहेश्वर्यै नमः ककुदि। ४५. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं वं श्रीमङ्गलायै नमः वामांसे।

४६. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं शं श्रीरूपिण्यै नमः हृदयादि दक्ष-हस्तान्ते। ४७. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं षं श्रीपीतायै नमः हृदयादि वाम-हस्तान्ते। ४८. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं सं श्रीपीताम्बरायै नमः हृदयादि दक्ष-पादान्ते। ४९. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं हं श्रीभव्यायै नमः हृदयादि वाम-पादान्ते। ५०. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं ळं श्रीसु-रूपा बहु-भाषिण्यै नमः हृदयादि-मुखे।

।। ध्यान ।।

चतुर्भुजां त्रि - नयनां, कमलासन - संस्थिताम्।
त्रिशूलं पान-पात्रं च, गदां जिह्वां च बिभ्रतीम।।
बिम्बोष्ठीं कम्बु-कण्ठीं च, सम-पीन-पयोधराम्।
पीताम्बरां मदाघूर्णां, ध्यायेद् ब्रह्मास्त्र-देवताम्।।

।। होम ।।

सांख्यायन तन्त्र में लिखा है कि कारण-मिश्रित जल से तर्पण कर बिल्व-कुसुमों से दशांश होम करना चाहिए। पुरश्चरण हेतु एक लाख जप का विधान बताया गया है।

★★★

षट्-त्रिंशदाक्षर-मन्त्र द्वारा श्रीपीताम्बरा-आराधना (१)

भगवती बगला के षट्-त्रिंशदाक्षर मन्त्र द्वारा श्रीपीताम्बरा की विशेष आराधना करने के लिए ३६ अक्षरवाले मन्त्र से सम्पुटित श्रीदुर्गा-सप्तशती के मध्यम चरित (महिषासुर-वधः) का पाठ करना चाहिए। इसके लिए निम्न प्रकार से पहले सङ्कल्प करना चाहिए। यथा –

ॐ तत् सत् (ब्रह्म ही एक-मात्र सत्य है), **अद्यैतस्य** (आज इस), **ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे** (ब्रह्मा के प्रथम दिवस के दूसरे पहर में), **श्रीश्वेत-वराह-कल्पे** (श्रीश्वेत-वराह नामक कल्प में), **जम्बू-द्वीपे** (जम्बू नामक द्वीप में), **भरत-खण्डे** (भरत के भू-खण्ड में), **आर्यावर्त्त-देशे** (आर्यावर्त्त नामक देश में), **अमुक पुण्य-क्षेत्रे** (अमुक पवित्र क्षेत्र में), **अमुक-प्रदेशे** (अमुक प्रदेश में), **अमुक-जनपदे** (अमुक जिले में), **अमुक-स्थाने** (अमुक स्थान में), **अमुक-संवत्सरे** (अमुक संवत्सर में), **अमुक-मासे** (अमुक मास में), **अमुक-पक्षे** (अमुक पक्ष में), **अमुक-तिथौ** (अमुक तिथि में), **अमुक-वासरे** (अमुक दिवस में), **अमुक-गोत्रोत्पन्नो** (अमुक गोत्र में उत्पन्न), **अमुक-नाम-शर्मा-वर्मा-दास** (अमुक नामवाला शर्मा, वर्मा, दास), **महिषासुर-घातिनी, महा-लक्ष्मी, महत्पद-प्रदायिनी श्रीबगला-मुखी-देवता-प्रीति-पूर्वक सर्व-मनोरथ-सिद्ध्यर्थं** (महिषासुर-घातिनी, महा-लक्ष्मी, महत्पद-प्रदायिनी श्रीबगला-मुखी देवता की प्रसन्नता-पूर्वक सभी मनोरथों की सिद्धि के लिए), **श्रीबगला-षट्-त्रिंशदाक्षर-मन्त्रस्य-सम्पुटित श्रीदुर्गा-सप्तशती-मध्यम-चरितस्य-पाठं सभक्त्याऽहं करिष्ये** (श्रीबगला षट्-त्रिंशद-अक्षर-मन्त्र से सम्पुटित श्रीदुर्गा-सप्तशती के मध्यम चरित का भक्ति-पूर्वक पाठ मैं करूगाँ)।

(सङ्कल्प-वाक्य में 'अमुक'-शब्द के स्थान पर सम्बन्धित नाम का उच्चारण करना होता है।)

उक्त प्रकार से सङ्कल्प करने के बाद **षट्-त्रिंशदाक्षर मन्त्र से युक्त श्रीदुर्गा सप्तशती के मध्यम** चरित का पाठ प्रति-दिन निश्चित समय पर करना चाहिए–

।। षट्-त्रिंशदाक्षर मन्त्र से सम्पुटित मध्यम चरित का पाठ ।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

ॐ ऋषिरुवाच ।।१।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

देवासुरमभूद् युद्धं, पूर्णमब्द-शतं पुरा।
महिषेऽसुराणामधिपे, देवानां च पुरन्दरे।।२।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

तत्रासुरैर्महा - वीर्यैर्देव - सैन्यं पराजितम्।
जित्वा च सकलान् देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः।।३।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

ततः पराजिता देवाः, पद्म-योनिं प्रजा-पतिम्।
पुरस्कृत्य गतास्तत्र, यत्रेश-गरुड-ध्वजौ।।४।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

यथा-वृत्तं तयोस्तद्-वन्महिषासुर-चेष्टितम्।
त्रिदशाः कथयामासुर्देवाभि-भव-विस्तरम्।।५।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां, यमस्य वरुणस्य च।
अन्येषां चाधिकारान् स, स्वयमेवाधि-तिष्ठति।।६।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

स्वर्गान्निराकृताः सर्वे, तेन देव-गणा भुवि।
विचरन्ति यथा मर्त्या, महिषेण दुरात्मना।।७।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

एतद् वः कथितं सर्वममरारि-विचेष्टितम्।
शरणं च प्रपन्नाः स्मो, वधस्तस्य विचिन्त्यताम्।।८।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

इत्थं निशम्य देवानां, वचांसि मधु-सूदनः।
चकार कोपं शम्भुश्च, भ्रकुटी-कुटिलाननौ।।९।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

ततोऽति-कोप-पूर्णस्य, चक्रिणो वदनात् ततः।
निश्चक्राम महत् तेजो, ब्रह्मणः शङ्करस्य च।।१०।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

अन्येषां चैव देवानां, शक्रादीनां शरीरतः।
निर्गतं सु-महत् तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत।।११।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

अतीव - तेजसः कूटं, ज्वलन्तमिव पर्वतम्।
ददृशुस्ते सुरास्तत्र, ज्वाला-व्याप्त-दिगन्तरम्।।१२।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

अतुलं तत्र तत् तेजः, सर्व - देव - शरीरजम्।
एकस्थं तदभून्नारी, व्याप्त-लोक-त्रयं त्विषा।।१३।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

यदभूच्छाम्भवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम्।
याम्येन चाभवन् केशा, बाहवो विष्णु-तेजसा।।१४।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

सौम्येन स्तनयोर्युग्मं, मध्यं चैन्द्रेण चाभवत्।
वारुणेन च जङ्घोरू, नितम्बस्तेजसा भुवः।।१५।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

ब्रह्मणस्तेजसा पादौ, तदंगुलयोऽर्क - तेजसा।
वसूनां च करांगुल्यः, कौबेरेण च नासिका।।१६।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः, प्राजापत्येन तेजसा।
नयन-त्रितयं जज्ञे, तथा पावक-तेजसा।।१७।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

भ्रुवौ च सन्ध्ययोस्तेजः, श्रवणावनिलस्य च।
अन्येषां चैव देवानां, सम्भवस्तेजसां शिवा।।१८।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

ततः समस्त-देवानां, तेजो-राशि-समुद्भवाम्।
तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः।।१९।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

शूलं शूलाद् विनिष्कृष्य, ददौ तस्यै पिनाक-धृक्।
चक्रं च दत्तवान् कृष्णः, समुत्पाद्य स्व-चक्रतः।।२०।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

शङ्खं च वरुणः शक्तिं, ददौ तस्यै हुताशनः।
मारुतो दत्त - वांश्चापं, बाण - पूर्णे तथेषुधी।।२१।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

वज्रमिन्द्रः समुत्पाद्य, कुलिशादमराधिपः।
ददौ तस्यै सहस्राक्षो, घण्टामैरावताद् गजात्।।२२।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

काल-दण्डाद् यमो दण्डं, पाशं चाम्बु-पतिर्ददौ।
प्रजापतिश्चाक्ष-मालां, ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम्।।२३।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

समस्त - रोम - कूपेषु, निज - रश्मीन् दिवाकरः।
कालश्च दत्त - वान् खड्गं, तस्याश्चर्म च निर्मलम्।।२४।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाऽम्बरे।
चूडा-मणिं तथा दिव्यं, कुण्डले कटकानि च।।२५।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

अर्ध - चन्द्रं तथा शुभ्रं, केयूरान् सर्व-बाहुषु।
नूपुरौ विमलौ तद् - वद्, ग्रैवेयकमनुत्तमम्।।२६।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

अंगुलीयक - रत्नानि, समस्तास्वंगुलीषु च।।२७।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

विश्व-कर्मा ददौ तस्यै, परशुं चाति-निर्मलम्।

अस्त्राण्यनेक-रूपाणि, तथाऽभेद्यं च दंशनम्।।२८।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

अम्लान-पङ्कजां मालां, शिरस्युरसि चापराम्।

अददज्जलधिस्तस्यै, पङ्कजं चाति-शोभनम्।।२९।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

हिम-वान् वाहनं सिंहं, रत्नानि विविधानि च।

ददावशून्यं सुरया, पान-पात्रं धनाधिपः।।३०।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

शेषश्च सर्व-नागेशो, महा-मणि-विभूषितम्।

नाग-हारं ददौ तस्यै, धत्ते यः पृथिवीमिमाम्।।३१।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

अन्यैरपि सुरैर्देवी, भूषणैरायुधैस्तथा।

सम्मानिता ननादोच्चैः, साट्टहासं मुहुर्मुहुः।।३२।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

तस्या नादेन घोरेण, कृत्स्नमापूरितं नभः।

अमायताति-महता, प्रति-शब्दो महानभूत्।।३३।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

चुक्षुभुः सकला लोकाः, समुद्राश्च चकम्पिरे।

चचाल वसुधा चेलुः, सकलाश्च मही-धराः।।३४।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

जयेति देवाश्च मुदा, तामूचुः सिंह-वाहिनीम्।

तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां, भक्ति - नम्रात्म - मूर्तयः।।३५।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं, त्रैलोक्यममरारयः।
सन्नद्धाखिल - सैन्यास्ते, समुत्तस्थुरुदायुधाः।।३६।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः।
अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः।।३७।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

स ददर्श ततो देवीं, व्याप्त-लोक-त्रयां त्विषा।
पादाक्रान्त्या नत - भुवं, किरीटोल्लिखिताम्बराम्।।३८।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

क्षोभिताशेष-पातालां, धनुर्ज्या-निःस्वनेन ताम्।
दिशो भुज - सहस्रेण, समन्ताद् व्याप्य संस्थिताम्।।३९।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

ततः प्रववृते युद्धं, तया देव्या सुर-द्विषाम्।
शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपित - दिगन्तरम्।।४०।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

महिषासुर - सेनानीश्चिक्षुराख्यो महाऽसुरः।
युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरङ्ग - बलान्वितः॥४१॥

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महाऽसुरः।
अयुध्यतायुतानां च, सहस्रेण महा-हनुः।।४२।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महाऽसुरः।
अयुतानां शतैः षड्भिर्वाष्कलो युयुधे रणे।।४३।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

गज - वाजि - सहस्त्रौघैरनेकैः परिवारितः।

वृतो रथानां कोट्या च, युद्धे तस्मिन्नयुध्यत।।४४।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

विडालाख्योऽयुतानां च, पञ्चाशद्भि रथायुतैः।

युयुधे संयुगे तत्र, रथानां परिवारितः।।४५।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

अन्ये च तत्रायुतशो, रथ - नाग - हयैर्वृताः।

युयुधुः संयुगे देव्या, सह तत्र महाऽसुराः।।४६।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

कोटि-कोटि-सहस्त्रैस्तु, रथानां दन्तिनां तथा।

हयानां च वृतो युद्धे, तत्राभून्महिषासुरः।।४७।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

तोमरैर्भिन्दिपालैश्च, शक्तिभिर्मुसलैस्तथा।

युयुधुः संयुगे देव्या, खड्गैः परशु-पट्टिशैः।।४८।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः, केचित् पाशांस्तथाऽपरे।

देवीं खड्ग-प्रहारैस्तु, ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः।।४९।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

साऽपि देवी ततस्तानि, शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका।

लीलयैव प्रचिच्छेद, निज - शस्त्रास्त्र-वर्षिणी।।५०।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

अनायस्तानना देवी, स्तूयमाना सुरर्षिभिः।
मुमोचासुर-देहेषु, शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी।।५१।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

सोऽपि क्रुद्धो धुत-सटो, देव्या वाहन-केशरी।
चचारासुर - सैन्येषु, वनेष्विव हुताशनः।।५२।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

निःश्वासान् मुमुचे यांश्च, युध्यमाना रणेऽम्बिका।
त एव सद्यः सम्भूता, गणाः शत-सहस्रशः।।५३।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दिपालासि-पट्टिशैः।
नाशयन्तोऽसुर-गणान्, देवी-शक्त्युपबृंहिताः।।५४।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

अवादयन्त पटहान्, गणाः शङ्खांस्तथाऽपरे।
मृदङ्गांश्च तथैवान्ये, तस्मिन् युद्ध-महोत्सवे।।५५।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

ततो देवी त्रिशूलेन, गदया शक्ति-वृष्टिभिः।
खड्गादिभिश्च शतशो, निजघान महाऽसुरान्।।५६।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

पातयामास चैवान्यान्, घण्टा - स्वन - विमोहितान्।
असुरान् भुवि पाशेन, बद्ध्वा चान्यानकर्षयत्।।५७।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

केचिद् द्विधा कृतास्तीक्ष्णैः, खड्ग-पातैस्तथाऽपरे।

विपोथिता निपातेन, गदया भुवि शेरते।।५८।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

वेमुश्च केचिद् रुधिरं, मुसलेन भृशं हताः।

केचिन्निपतिता भूमौ, भिन्नाः शूलेन वक्षसि।।५९।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

निरन्तराः शरौघेण, कृताः केचिद् रणाजिरे।

श्येनानुकारिणः प्राणान्, मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः।।६०।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

केषांचिद् बाहवश्छिन्नाश्छिन्न-ग्रीवास्तथाऽपरे।

शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः।।६१।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

.विच्छिन्न-जङ्घास्त्वपरे, पेतुरुर्व्यां महाऽसुराः।

एक-बाह्वक्षि-चरणाः, केचिद् देव्या द्विधा कृताः।।६२।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि, पतिताः पुनरुत्थिताः।

कबन्धा युयुधुर्देव्या, गृहीत - परमायुधाः।।६३।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

ननृतुश्चापरे तत्र, युद्धे तूर्य - लयाश्रिताः।।६४।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

कबन्धाश्छिन्न - शिरसः, खड्ग - शक्त्यृष्टि - पाणयः।

तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो, देवीमन्ये महाऽसुराः।।६५।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

पातितै रथ - नागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा।

अगम्या साऽभवत् तत्र, यत्राऽभूत् स महा-रणः।।६६।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

शोणितौघा महा-नद्यः, सद्यस्तत्र प्रसुस्त्रुवुः।

मध्ये चासुर - सैन्यस्य, वारणासुर - वाजिनाम्।।६७।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

क्षणेन तन्महा - सैन्यमसुराणां तथाऽम्बिका।

निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृण-दारु-महा-चयम्।।६८।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

स च सिंहो महा-नादमृत्सृजन् धुत-केशरः

शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति।।६९।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

देव्या गणैश्च तैस्तत्र, कृतं युद्धं महाऽसुरैः।

यथैषां तुतुषुर्देवाः, पुष्प-वृष्टि-मुचो दिवि ।।७०।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

ॐ ऋषिरुवाच ।।७१।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

निहन्य-मानं तत्-सैन्यमवलोक्य महाऽसुरः।
सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्, ययौ योद्धुमथाम्बिकाम्।।७२।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

स देवीं शर-वर्षेण, ववर्ष समरेऽसुरः।
यथा मेरु-गिरेः शृङ्गं, तोय-वर्षेण तोयदः।।७३।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

तस्य च्छित्वा ततो देवी, लीलयैव शरोत्करान्।
जघान् तुरगान् वाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम्।।७४।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

चिच्छेद च धनुः सद्यो, ध्वजं चाति-समुच्छ्रितम्।
विव्याध चैव गात्रेषु, छिन्न-धन्वानमाशुगैः।।७५।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

स च्छिन्न-धन्वा विरथो, हताश्वो हत-सारथिः।
अभ्यधावत तां देवीं, खड्ग-चर्म-धरोऽसुरः।।७६।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

सिंहमाहत्य खड्गेन, तीक्ष्ण-धारेण मूर्धनि।
आजघान भुजे सव्ये, देवीमप्यति-वेग-वान्।।७७।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य, पफाल नृप-नन्दन!
ततो जग्राह शूलं स, कोपादरुण-लोचनः।।७८।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

चिक्षेप च ततस्तत् तु, भद्र - काल्यां महाऽसुरः।

जाज्वल्य - मानं तेजोभी, रवि - बिम्बमिवाम्बरात्।।७९।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

दृष्ट्वा तदापतच्छूलं, देवी शूलममुञ्चत।

तच्छूलं शतधा तेन, नीतं स च महाऽसुरः।।८०।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

हते तस्मिन् महा-वीर्ये, महिषस्य चमू-पतौ।

आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः।।८१।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ, देव्यास्तामम्बिका द्रुतम्।

हुङ्काराभि-हतां भूमौ, पातयामास निष्प्रभाम् ।।८२।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

भग्नां शक्तिं निपतितां, दृष्ट्वा क्रोध-समन्वितः।

चिक्षेप चामरः शूलं, बाणैस्तदपि साच्छिनत्।।८३।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

ततः सिंहः समुत्पत्य, गज-कुम्भान्तरे स्थितः।

बाहु-युद्धेन युयुधे, तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा।।८४।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

युद्ध्यमानौ ततस्तौ तु, तस्मान्नागान् महीं गतौ।

युयुधातेऽति-संरब्धौ, प्रहारैरति-दारुणैः।।८५।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

ततो वेगात् खमुत्पत्य, निपत्य च मृगारिणा।

कर-प्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक् कृतम्।।८६।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

उदग्रश्च रणे देव्या, शिला-वृक्षादिभिर्हतः।

दन्त-मुष्टि-तलैश्चैव, करालश्च निपातितः।।८७।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

देवी क्रुद्धा गदा - पातैश्चूर्णयामास चोद्धतम्।

वाष्कलं भिन्दिपालेन, बाणैस्ताम्रं तथाऽन्धकम्।।८८।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

उग्रास्यमुग्र-वीर्यं च, तथैव च महा-हनुम्।

त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन, जघान परमेश्वरी।।८९।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

विडालस्यासिना कायात्, पातयामास वै शिरः।

दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ, शरैर्निन्ये यम-क्षयम्।।९०।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

एवं संक्षीयमाणे तु, स्व-सैन्ये महिषासुरः।

माहिषेण स्वरूपेण, त्रासयामास तान् गणान्।।९१।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

कांश्चित् तुण्ड - प्रहारेण, खुर - क्षेपैस्तथाऽपरान्।

लांगूल - ताडितांश्चान्याञ्छृङ्गाभ्यां च विदारितान्।।९२।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

वेगेन काँश्चिदपरान्, नादेन भ्रमणेन च।
निःश्वास-पवनेनान्यान्, पातयामास भू-तले।।९३।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः।
सिंहं हन्तुं महा-देव्याः, कोपं चक्रे ततोऽम्बिका।।९४।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

सोऽपि कोपान्महा-वीर्यः, खुर - क्षुण्ण - मही - तलः।
शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चांश्चिक्षेप च ननाद च।।९५।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

वेग-भ्रमण-विक्षुण्णा, मही तस्य व्यशीर्यत।
लांगूलेनाहतश्चाब्धिः, प्लावयामास सर्वतः।।९६।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

धुत-शृङ्ग-विभिन्नाश्च, खण्डं खण्डं ययुर्घनाः।
श्वासानिलास्ताः शतशो, निपेतुर्नभसोऽचलाः।।९७।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

इति क्रोध-समाध्मातमापतन्तं महाऽसुरम्।
दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं, तद्-बधाय तदाऽकरोत्।।९८।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं, तं बबन्ध महाऽसुरम्।
तत्याज माहिषं रूपं, सोऽपि बद्धो महा-मृधे।।९९।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

ततः सिंहोऽभवत् सद्यो, यावत् तस्याम्बिका शिरः।

छिनत्ति तावत् पुरुषः, खड्ग-पाणिरदृश्यत।।१००।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

तत एवाशु पुरुषं, देवी चिच्छेद सायकैः।

तं खड्ग-चर्मणा सार्धं, ततः सोऽभून्महा-गजः।।१०१।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

करेण च महा-सिंहं, तं चकर्ष जगर्ज च।

कर्षतस्तु करं देवी, खड्गेन निरकृन्तत।।१०२।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

ततो महाऽसुरो भूयो, माहिषं वपुरास्थितः।

तथैव क्षोभयामास, त्रैलोक्यं स-चराचरम्।।१०३।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

ततः क्रुद्धा जगन्माता, चण्डिका पानमुत्तमम्।

पपौ पुनः पुनश्चैव, जहासारुण-लोचना।।१०४।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

ननर्द चासुरः सोऽपि, बल-वीर्य-मदोद्धतः।

विषाणाभ्यां च चिक्षेप, चण्डिकां प्रति भूधरान्।।१०५।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

सा च तान् प्रहितांस्तेन, चूर्णयन्ती शरोत्करैः।

उवाच तं मदोद्भूत-मुख-रागाकुलाक्षरम्।।१०६।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

देव्युवाच ।।१०७।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ!, मधु यावत् पिबाम्यहम्।
मया त्वयि हतेऽत्रैव, गर्जिष्यन्त्याशु देवताः।।१०८।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

ऋषिरुवाच ।।१०९।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

एवमुक्त्वा समुत्पत्य, साऽऽरूढा तं महाऽसुरम्।
पादेनाक्रम्य कण्ठे च, शूलेनैनमताडयत्।।११०।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

ततः सोऽपि पदाक्रान्तस्तया निज-मुखात् ततः।
अर्ध-निष्क्रान्त एवासीद्, देव्या वीर्येण संवृतः।।१११।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

अर्ध-निष्क्रान्त एवासौ, युध्यमानो महाऽसुरः।
तया महाऽसिना देव्या, शिरश्छित्वा निपातितः।।११२।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

ततो हाहा-कृतं सर्वं, दैत्य-सैन्यं ननाश तत्।
प्रहर्षं च परं जग्मुः, सकला देवता-गणाः।।११३।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

तुष्टुवुस्तां सुरा-देवीं, सह दिव्यैर्महर्षिभिः।
जगुर्गन्धर्व-पतयो, ननृतुश्चाप्सरो-गणाः।।११४।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

।। ऋषिरुवाच ।।११५।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

शक्रादय: सुर-गणा निहतेऽति-वीर्ये, तस्मिन् दुरात्मनि सुरारि-बले च देव्या।
तां तुष्टुवु: प्रणति-नम्र-शिरोधरांसा, वाग्भि: प्रहर्ष-पुलकोद्गम-चारु-देहा:।।११६।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

देव्या यया ततमिदं जगदात्म-शक्त्या,
निश्शेष - देव - गण - शक्ति - समूह - मूर्त्या।
तामम्बिकामखिल - देव - महर्षि - पूज्याम्,
भक्त्या नता: स्म विदधातु शुभानि सा न:।।११७।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

यस्या: प्रभावमतुलं भगवाननन्तो,
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च।
सा चण्डिकाऽखिल-जगत्-परिपालनाय,
नाशाय चाशुभ-भयस्य मतिं करोतु।।११८।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

या श्री: स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मी:,
पापात्मनां कृत-धियां हृदयेषु बुद्धि:।
श्रद्धा सतां कुल-जन-प्रभवस्य लज्जा,
तां त्वां नता: स्म परिपालय देवि! विश्वम्।।११९।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्,
किं चाति-वीर्यमसुर-क्षय-कारि भूरि।
किं चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि,
सर्वेषु देव्यसुर - देव - गणादिकेषु।।१२०।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

हेतुः समस्त-जगतां त्रिगुणाऽपि दोषै-
र्न ज्ञायसे हरि-हरादिभिरप्यपारा।
सर्वाश्रयाऽखिलमिदं जगदंश-भूत-
मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या।।१२१।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'
'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

यस्याः समस्त-सुरता समुदीरणेन,
तृप्तिं प्रयान्ति सकलेषु मखेषु देवि!
स्वाहाऽसि वै पितृ-गणस्य च तृप्ति-
हेतुरुचार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च।।१२२।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'
'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

या मुक्ति-हेतुरविचिन्त्य-महा-व्रता त्व-
मभ्यस्यसे सु-नियतेन्द्रिय-तत्त्व-सारैः।
मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्त - समस्त - दोषै-
र्विद्याऽसि सा भगवती परमा हि देवि!।।१२३।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'
'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

शब्दात्मिका सु-विमलर्ग्यजुषां निधानमुद्गीथ-
रम्य - पद - पाठ - वतां च साम्नाम्।
देवी त्रयी भगवती भव - भावनाय,
वार्त्ता च सर्व-जगतां परमार्ति - हन्त्री।।१२४।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'
'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

मेधाऽसि देवि! विदिताऽखिल-शास्त्र-सारा,
दुर्गाऽसि दुर्ग - भव - सागर - नौर - सङ्गा।
श्रीः कैटभारि - हृदयैक - कृताधिवासा,
गौरी त्वमेव शशि-मौलि-कृत-प्रतिष्ठा।।१२५।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

ईषत्-सहासममलं परि-पूर्ण-चन्द्र-बिम्बानु-

कारि - कनकोत्तम - कान्ति - कान्तम्।

अत्यद्भुतं प्रहृतमाप्त-रुषा तथापि,

वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण।।१२६।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

दृष्ट्वा तु देवि! कुपितं भ्रुकुटी-कराल-

मुद्यच्छशाङ्क-सदृशच्छवि यन्न सद्यः।

प्राणान् मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं,

कैर्जीव्यते हि कुपितान्तक-दर्शनेन।।१२७।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

देवि! प्रसीद परमा भवती भवाय,

सद्यो विनाशयसि कोप-वती कुलानि।

विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेतन्नीतं

बलं सु - विपुलं महिषासुरस्य।।१२८।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

ते सम्मता जन-पदेषु धनानि तेषां,

तेषां यशांसि न च सीदति बन्धु-वर्गः।

धन्यास्त एव निभृतात्मज-भृत्य-दारा,

येषां सदाऽभ्युदयदा भवती प्रसन्ना।।१२९।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

धर्म्याणि देवि! सकलानि सदैव

कर्माण्यत्यादृतः प्रति-दिनं सुकृती करोति।

स्वर्गं प्रयाति च ततो भवती-प्रसादाल्लोक-

त्रयेऽपि फलदा ननु देवि! तेन।।१३०।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।
दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि! का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।।१३१।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते, कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्।
संग्राम-मृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु, मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि!।।१३२।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म, सर्वासुरानरिषु यत् प्रहिणोषि शस्त्रम्।
लोकान् प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्र-पूता, इत्थं मतिर्भवति तेष्वपि तेऽति-साध्वी।।१३३।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

खड्ग-प्रभा-निकर-विस्फुरणैस्तथोग्रैः, शूलाग्र-कान्ति-निवहेन दृशोऽसुराणाम्।
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दु-खण्ड- योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत्।।१३४।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

दुर्वृत्त-वृत्त-शमनं तव देवि! शीलं, रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः।
वीर्यं च हन्तृ हृत-देव-पराक्रमाणां, वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम्।।१३५।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य, रूपं च शत्रु-भय-कार्यति-हारि कुत्र?
चित्ते कृपा समर-निष्ठुरता च दृष्टा, त्वय्येव देवि वरदे! भुवन-त्रयेऽपि।।१३६।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपु-नाशनेन, त्रातं त्वया समर-मूर्धनि तेऽपि हत्वा।
नीता दिवं रिपु-गणा भयमप्यपास्त- मस्माकमुन्मद-सुरारि-भवं नमस्ते।।१३७।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

शूलेन पाहि नो देवि! पाहि खड्गेन चाम्बिके!

घण्टा-स्वनेन नः पाहि, चाप-ज्या-निःस्वनेन च।।१३८।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च, चण्डिके! रक्ष दक्षिणे।

भ्रामणेनात्म-शूलस्य, उत्तरस्यां तथेश्वरि!।।१३९।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

सौम्यानि यानि रूपाणि, त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।

यानि चात्यर्थ-घोराणि, तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्।।१४०।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

खड्ग - शूल - गदादीनि, यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके!

कर - पल्लव - सङ्गीनि, तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।।१४१।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

ऋषिरुवाच ।।१४२।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः, कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः।

अर्चिता जगतां धात्री, तथा गन्धानुलेपनैः।।१४३।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैस्तु धूपिता।

प्राह प्रसाद-सुमुखी, समस्तान् प्रणतान् सुरान्।।१४४।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

देव्युवाच ।।१४५।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

व्रियतां त्रिदशाः! सर्वे, यदस्मत्तोऽभि-वाञ्छितम्।

दादाम्यहमति-प्रीत्या, स्तवैरेभिः सु-पूजिता।।१४६।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

देवा ऊचुः ।।१४७।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

भगवत्या कृतं सर्वं, न किञ्चिदवशिष्यते।

यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः।।१४८।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

यदि चापि वरो देयस्त्वयाऽस्माकं महेश्वरि!

संस्मृता संस्मृता त्वं नो, हिंसेथाः परमापदः।।१४९।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने!

तस्य वित्तर्द्धि-विभवैर्धन - दारादि - सम्पदाम्।।१५०।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

वृद्धयेऽस्मत् प्रसन्ना त्वं, भवेथाः सर्वदाऽम्बिके।।१५१।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

उक्त प्रकार से श्रीदुर्गा सप्तशती के मध्यम चरित का सम्पुटित पाठ करने के बाद भगवती बगला के निम्नलिखित नामों का जप करना चाहिए। यथा–

।। श्रीबगला-नाम-जप ।।

ॐ नव-दुर्गायै नमः, ॐ दुर्गा-शिवायै नमः, ॐ दुर्गा-दुर्गति-नाशिन्यै नमः, ॐ दुर्गार्ति-नाशिन्यै नमः, ॐ महिषासुर-घातिन्यै नमः, ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः, ॐ महत्पद-प्रदायिन्यै नमः।

षट्-त्रिंशदाक्षर-मन्त्र द्वारा श्रीपीताम्बरा-आराधना (२)

भगवती बगला के षट्-त्रिंशदाक्षर मन्त्र द्वारा श्रीपीताम्बरा की विशेष आराधना करने के लिए षट्-त्रिंशदाक्षर मन्त्र से सम्पुटित श्री दुर्गा सप्तशती के सातवें अध्याय का पाठ भी किया जा सकता है। उदाहरण के रूप में यहाँ 'चण्डी' के प्रवर्त्तक 'कौल-कल्पतरु' पं० देवीदत्त शुक्ल जी द्वारा रचित श्रीदुर्गा सप्तशती (शब्दश: पद्यानुवाद) के सातवें अध्याय को माता श्रीबगला के ३६ अक्षर के मन्त्र से सम्पुटित कर प्रस्तुत किया जा रहा है। इसके द्वारा संस्कृत न जाननेवाले बन्धु भी माता बगला की विशेष कृपा की प्राप्ति कर आध्यात्मिक उन्नति कर सकते हैं। यथा –

।। श्रीबगला के छत्तीस अक्षरों से सम्पुटित श्रीदुर्गा सप्तशती का सातवाँ अध्याय ।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

॥ ऋषि बोले ॥

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

चण्ड - मुण्ड को आगे करके, आज्ञा पा दानव आए।
चतुरङ्गिनी सैन्य सँग लेकर, अस्त्र-शस्त्र सज्जित धाए।।१।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

देखा वहाँ अम्बिका को जो, सिंहारूढ़ा थीं हँसतीं।
ऊँचे स्वर्ण-श्रृङ्ग पर गिरि के, भली भाँति थीं वह दिखतीं।।२।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

पहुँच समीप बहुत देवी के, कितने ताने धनुष-कृपाण।
उद्यत हुए पकड़ने को वे, देख अम्बिका को स्थिति-मान।।३।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

तब उन वैरी असुरों के प्रति, किया अम्बिका ने अति क्रोध।
उससे मुख आरक्त हो गया, उनको रहा न कुछ भी बोध।।४।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

भौंह कुटिल होने पर उनके, माथे से निकलीं काली।
अति कराल मुख हाथ लिए असि, तथा पाश भी भयवाली।।५।।

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'
लिए अनोखा लौह-दण्ड भी, पहने भीषण नर-माला।
व्याघ्र-चर्म ओढ़े कङ्काली, महा-भयानक वह बाला॥६॥
'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'
था विस्तृत भारी मुख उनका, लोल जीभ थी अति ही घोर।
आँखें धँसी लाल थीं उनकी, व्याप्त नाद था चारों ओर॥७॥
'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'
महाऽसुरों को आहत करतीं, बड़े वेग से वह आकर।
उस भारी सेना-दल का तब, करने भक्षण लगीं वहाँ पर॥८॥
'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'
पार्श्वक, अंकुश - धारी, योद्धा, हाथी जो थे घण्टा - युक्त।
एक हाथ से मुख में रखकर, लगीं उन्हें करने वह भुक्त॥९॥
'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'
उसी भाँति अश्वारोही को, रथ रथवान - सहित लेकर।
मुख में डाल लगीं वह करने, चर्वण दाँतों में देकर॥१०॥
'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'
किसी एक को पकड़ केश से, तथा गले से अपर असुर।
पदाघात कर और किसी का, दलन किया देकर निज उर॥११॥
'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'
उन असुरों ने जो फेंके थे, शस्त्र-महास्त्र विचार - विचार।
क्रोध-सहित मुख में रख डाला, पीस उन्हें दाँतों से मार॥१२॥
'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'
स्थूल - काय बलवान दानवों, की सेना का अति मर्दन।
किया तथा अपरों का भक्षण, और दूसरों का अर्दन॥१३॥
'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

असुरों की सारी सेना का, क्षण में हुआ पूर्ण संहार।
भीमा काली के प्रति दौड़ा, चण्ड देखकर यह व्यापार॥१४॥

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'
'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

कोई मारे गए खड्ग से, लौह - दण्ड से कोई चूर।
दाँतों के ही अग्र - भाग से, हुए निपातित कोई शूर॥१५॥

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'
'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

महा-भयानक वाण-वृष्टि कर, वहाँ चण्ड ने करके कोप।
फेंक मुण्ड ने चक्र सहस्त्रों, दिया कालिका को तब तोप॥१६॥

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'
'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

उसके मुख में चक्र अनेकों, हो प्रविष्ट लखते ऐसे।
सूर्य - बिम्ब घन में बहुतेरे, घुसने पर दिखते जैसे॥१७॥

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'
'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

होकर क्रुद्ध महा-काली ने, किया हास्य अति ही घनघोर।
दमक उठा उनका मुख-मण्डल, पा दाँतों की चमक-हिलोर॥१८॥

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'
'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'हुं' कह देवी घोर खड्ग ले, दौड़ीं शीघ्र चण्ड की ओर।
केश पकड़कर लिया काट सिर, उसका उसने करके रोर॥१९॥

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'
'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

देख चण्ड को निहत मुण्ड भी, उसके प्रति दौड़ा ललकार।
देवी ने उसको भी तत्क्षण, किया धराशायी असि मार॥२०॥

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'
'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

देख निपातित चण्ड-मुण्ड को, बची-खुची जो सेना थी।
इधर-उधर झट गई भाग वह, भय-आकुल अति दीना थी॥२१॥

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

चण्ड - मुण्ड के सिर काली ले, अट्टहास भारी करतीं।
गईं चण्डिका के समीप औ, बोलीं अति प्रमोद धरतीं॥२२॥

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'
'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

युद्ध-यज्ञ में मैंने तुमको, चण्ड-मुण्ड-पशु किए प्रदान।
शुम्भ-निशुम्भासुर को अब तुम, निधन करोगी चित में ठान॥२३॥

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'
'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

॥ ऋषि बोले ॥

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'
'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

चण्ड - मुण्ड दोनों असुरों के, लिए हुए भीषण सिर देख।
कहा चण्डिका ने काली से, ललित बात यह एक विशेष॥२४॥

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'
'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

॥ देवी बोलीं ॥

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'
'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

चण्ड-मुण्ड के मस्तक लेकर, आईं यहाँ सिद्ध कर काम।
जगती में आगे चामुण्डा, होगा ख्यात तुम्हारा नाम॥२५॥

'ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा'

उक्त प्रकार से श्रीदुर्गा सप्तशती के सातवें अध्याय का सम्पुटित पाठ करने के बाद भगवती बगला के निम्नलिखित नामों का जप करना चाहिए। यथा–

॥ श्रीबगला-नाम-जप ॥

ॐ चामुण्डायै नमः, ॐ मुण्डिकायै नमः, ॐ चण्डयै नमः, ॐ चण्ड-दर्प-हरायै नमः, ॐ उग्र-चण्डायै नमः, ॐ चण्ड-चण्डायै नमः, ॐ चण्ड-दैत्य-विनाशिन्यै नमः, ॐ प्रचण्डायै नमः, ॐ चण्ड-शरीरिण्यै नमः, ॐ चतुर्भुजा-प्रचण्डायै नमः, ॐ चण्डिका-चण्ड-विक्रमायै नमः।

ग्रहादि-बाधा, रोग-नाशार्थ
श्रीबगला-षट्-त्रिंशदाक्षर-मन्त्र द्वारा आराधना (३)

।। सङ्कल्प ।।

ॐ अद्यैतस्य ... अमुक-मासे अमुक-पक्षे अमुक-वासरे अमुक-गोत्रोत्पन्नो अमुक-शर्माऽहं (वर्माहं, गुप्तोऽहं वा) मम स्व-शरीरस्य (मम अमुक-यजमानस्य शरीरस्य वा) सम्पूर्ण-रोग-समूह-वात्तिक-पैत्तिक-श्लैष्मिक-द्वन्द्वज - नाना-दुष्ट-रोगा - जन्मज-पातकज-नाना-ग्रहोपग्रह-प्रयोग-ग्रह-प्रवेश-ग्रह-प्रयोग-ग्रहादि-शान्त्यर्थे सर्व-ग्रहोच्चाटनार्थे श्रीबगलामुखी-देवता-मन्त्रस्य अयुत-जप-तद्दशांश-होम-तर्पण-मार्जनाय सङ्कल्पमहम् करिष्ये।

।। विनियोग ।।

ॐ अस्य श्रीबगलामुखी-मन्त्रस्य श्रीनारद-ऋषिः। त्रिष्टुप् छन्दः। श्रीबगलामुखी देवता। ह्लीं बीजं। स्वाहा शक्तिः। मम शरीरे (यजमानस्य शरीरे वा) नाना-ग्रहोपग्रह-प्रयोग-ग्रह-प्रवेश-ग्रह-प्रयोग-सम्पूर्ण-रोग-समूह-वात्तिक-पैत्तिक-श्लैष्मिक-द्वन्द्वजादि-नाना-दुष्ट-रोग-जन्मज-पातकजादि-शान्त्यर्थे सर्व-दुष्ट-बाधा-कष्ट-कारक-ग्रहस्य उच्चाटनार्थे शीघ्रारोग्य-लाभार्थे एवं मम अन्य-अभीष्ट-कार्य-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

।। ऋष्यादि-न्यास ।।

श्री नारद-ऋषये नमः शिरसि। त्रिष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। श्रीबगलामुखी-देवतायै नमः हृदि। ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहा-शक्तये नमः पादयोः। मम शरीरे (यजमानस्य शरीरे वा) नाना-ग्रहोपग्रह-प्रयोग-ग्रह-प्रवेश-ग्रह-प्रयोग-सम्पूर्ण-रोग-समूह-वात्तिक-पैत्तिक-श्लैष्मिक-द्वन्द्वजादि-नाना-दुष्ट-रोग-जन्मज-पातकजादि-शान्त्यर्थे सर्व-दुष्ट-बाधा-कष्ट-कारक-ग्रहस्य उच्चाटनार्थे शीघ्रारोग्य-लाभार्थे एवं मम अन्य-अभीष्ट-कार्य-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

अङ्ग-न्यास	कर-न्यास	हृदयादि-न्यास
ॐ ह्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
बगला-मुखि	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सर्व-दुष्टानां	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
वाचं मुखं स्तम्भय	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
जिह्वां कीलय कीलय	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वौषट्
बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट् ।

।। ध्यान ।।

हाथ में पीले फूल, पीले अक्षत और जल लेकर ध्यान करे–

मध्ये सुधाब्धि-मणि-मण्डप-रत्न-वेद्यां, सिंहासनोपरि-गतां परिपीत-वर्णाम् ।
पीताम्बराभरण-माल्य-विभूषिताङ्गीं, देवीं स्मरामि धृत-मुद्गर-वैरि-जिह्वाम् ।।

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परि-पीडयन्तीम्।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्वि-भुजां नमामि।।

।। पूजा-विधि ।।

उपर्युक्त ध्यान करके चित्र के सामने या किसी पीतल के पात्र में हाथ का अक्षत-फूल रखकर निम्न प्रकार पूजन करे-

श्री बगलामुखी-देव्यै नमः आवाहनं समर्पयामि, ध्यानं समर्पयामि, आसनं समर्पयामि, पाद्यं समर्पयामि, अर्घ्यं समर्पयामि, आचमनीयं समर्पयामि, अक्षतान् समर्पयामि, पुष्पं समर्पयामि, धूपं आघ्रापयामि, दीपं दर्शयामि, नैवेद्यं निवेदयामि, नैवेद्यन्ते पानीयं समर्पयामि।

।। जप हेतु मन्त्र ।।

१. ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं अमुक-देह-स्थित-नाना-रोगान् आश्रित-आवाहित-सर्व-दुष्ट-प्रयोग - प्रतिबन्धक-ग्रहान् फट् उच्चाटनं कुरु कुरु स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

२. ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं अमुक-देह-स्थित ज्वर (वातज/पित्तज/कफज/त्रिदोषज) दुष्ट-प्रतिबन्ध-ग्रहान् फट् उच्चाटनं कुरु कुरु स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

३. ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं अमुक-देह-स्थित-ज्वर (वातादि) पर-प्रयोगादि-सर्व-दुष्ट-प्रयोग-ग्रहान् फट् उच्चाटनं कुरु कुरु स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

तीनों में से किसी एक मन्त्र का दस हजार जप करे। जप का दशांश हवन घी, शहद, चीनी, दूब, गुरुच, धान के लावा, कुम्हार के चाक की मिट्टी, चार-चार अंगुल के रेंड काष्ठ के टुकड़े, गीध, कौवे के पंख, पीले सरसों का तेल - सब मिलाकर उससे बैर की लकड़ी की अग्नि में करे। हवन के बाद उसका दशांश तर्पण, फिर उसका दशांश मार्जन क्रमशः 'श्रीबगलामुख्यै देव्यै नमः तर्पयामि, मार्जयामि' मन्त्रों से करे। इसके बाद सात या नौ कुमारी कन्याओं तथा एक वटुक (आठ वर्ष के बालक) का पूजन कर उन्हें भोजन कराएँ। भोजनोपरान्त यथा-शक्ति दक्षिणा देकर पैर छूकर उन्हें प्रणाम करे और उन सबके हाथ से अपनी पीठ और सिर पर आशीर्वाद-स्वरूप थपकी ले। भोजन में केला और बेसन का लड्डू रहे, अन्य कोई सामग्री नहीं।

एक से चार तक आवृत्ति करने से कठिन-से-कठिन रोगों से छुटकारा प्राप्त होगा। सङ्कल्प में यथा-स्थान रोग या बाधा का नामोल्लेख कर दे। यथा-सम्भव एक बार के प्रयोग में एक ही मुख्य रोग या बाधा के निवारण हेतु सङ्कल्प करे।

भगवती पीताम्बरा के शिव

भगवान् मृत्युञ्जय के त्र्यक्षर-मन्त्र की साधना

'ॐ जूं सः' – भगवती पीताम्बरा के शिव भगवान् मृत्युञ्जय का त्र्यक्षर मन्त्र है। यह 'लघु मृत्युञ्जय-मन्त्र' भी कहलाता है। केवल इसी मन्त्र के जप मात्र से अनेक बन्धुओं ने सङ्कट पर आश्चर्यजनक रूप से लाभ उठाया है। इसमें तीन बीज हैं – (१) ॐ, (२) जूं और (३) सः। इन तीनों बीजों के अर्थ इस प्रकार हैं– (१) ॐ = १. ब्रह्मा, २. विष्णु तथा ३. शिव – तीनों दैवत। १. सत्त्व, २. रजस् और ३. तमस् – तीनों गुण। १. उत्पत्ति, २. स्थिति और ३. लय – तीनों क्रियाएँ। (२) जूं = जीवन-भाव। (३) सः = शक्ति-भाव। 'त्र्यक्षर मन्त्र' (ॐ जूं सः) का 'जप' - विधान इस प्रकार है –

विनियोग – **ॐ अस्य श्रीमृत्युञ्जय-त्र्यक्षर-मन्त्रस्य श्रीकहोलः ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमृत्युञ्जयो महादेवः, ॐ (अथवा जूं) बीजं, सः शक्तिः, मम अभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादि-न्यास – **श्री कहोल-ऋषये नमः शिरसि, गायत्री-छन्दसे नमः मुखे, श्री मृत्युञ्जय-महा-देवाय देवतायै नमः हृदि, ॐ-बीजाय (अथवा जूं-बीजाय) नमः गुह्ये, सः-शक्तये नमः पादयोः, मम अभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।**

कर-न्यास – **सां अंगुष्ठाभ्यां नमः, सीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, सूं मध्यमाभ्यां वषट्, सैं अनाभिकाभ्यां हुम्, सौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्, सः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।**

अङ्ग-न्यास – **सां हृदयाय नमः, सीं शिरसि स्वाहा, सूं शिखायै वषट्, सैं कवचाय हुम्, सौं नेत्र-त्रयाय वौषट्, सः अस्त्राय फट्।**

॥ ध्यान ॥

चन्द्रार्काग्नि-विलोचनं स्मित-मुखं पद्म-द्वयान्तः-स्थितम्
मुद्रा-पाश-मृगाक्ष-सूत्र-विलसत्-पाणिं हिमांशु-प्रभम्।
कोटीरेन्दु - गलत् - सुधा - प्लुत - तनुं हारादि - भूषोज्ज्वलम्
कान्त्या विश्व-विमोहनं पशु-पतिं मृत्युञ्जयं भावयेत् ॥

अर्थात् भगवान् मृत्युञ्जय के तीन नेत्र चन्द्र-सूर्य-अग्नि हैं। मुख पर मुस्कान है। दो कमल-पुष्पों के मध्य में विराजमान हैं। १ मुद्रा, २ पाश, ३ मृग और ४ अक्ष-माला से चारों हाथ सुशोभित हैं। चन्द्रमा के समान आभा है। चन्द्रमा से द्रवित अमृत के द्वारा शरीर आर्द्र है। हार आदि अलङ्कारों से सारे संसार को मुग्ध करनेवाले पशुपति भगवान् मृत्युञ्जय का मैं ध्यान करता हूँ।

॥ मानस-पूजा ॥

ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीमृत्युञ्जय-महा-देव-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीमृत्युञ्जय-महा-देव-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीमृत्युञ्जय-महा-देव-प्रीतये घ्रापयामि नमः।
ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीमृत्युञ्जय-महा-देव-प्रीतये दर्शयामि नमः।
ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीमृत्युञ्जय-महा-देव-प्रीतये निवेदयामि नमः।
ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीमृत्युञ्जय-महा-देव-प्रीतये समर्पयामि नमः।

।। जप एवं पुरश्चरण ।।

उक्त मन्त्र के 'पुरश्चरण' हेतु कुल तीन लाख 'जप' करे। तीन लाख जप पूरा होने पर घृत-दुग्ध-मिश्रित गुडूची-लता के टुकड़ों से ३००० आहुतियाँ प्रदान करे।

।। वर्ण-माला में श्रीपीताम्बरा के एकाक्षर-मन्त्र से सम्पुटित जप ।।

भगवती पीताम्बरा के एकाक्षर मन्त्र 'ह्लीं' से सम्पुटित कर वर्ण-माला में जप करने से माता पीताम्बरा व मृत्युञ्जय भगवान् शिव दोनों की कृपा प्राप्त होती है। साथ ही सभी प्रकार के भयों से मुक्त होकर सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति भी होती है। यथा –

ॐ

०१. अं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं अं
०२. आं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं आं
०३. इं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं इं
०४. ईं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं ईं
०५. उं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं उं
०६. ऊं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं ऊं
०७. ऋं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं ऋं
०८. ॠं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं ॠं
०९. ऌं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं ऌं
१०. ॡं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं ॡं
११. एं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं एं
१२. ऐं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं ऐं
१३. ओं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं ओं
१४. औं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं औं
१५. अं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं अं
१६. अः ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं अः
१७. कं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं कं
१८. खं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं खं
१९. गं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं गं
२०. घं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं घं
२१. ङं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं ङं
२२. चं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं चं
२३. छं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं छं
२४. जं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं जं
२५. झं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं झं
२६. ञं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं ञं
२७. टं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं टं
२८. ठं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं ठं
२९. डं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं डं
३०. ढं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं ढं
३१. णं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं णं
३२. तं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं तं
३३. थं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं थं
३४. दं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं दं
३५. धं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं धं
३६. नं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं नं
३७. पं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं पं
३८. फं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं फं
३९. बं ह्लीं ॐ जूं मः ह्लीं बं
४०. भं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं भं
४१. मं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं मं
४२. यं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं यं
४३. रं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं रं
४४. लं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं लं
४५. वं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं वं
४६. शं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं शं
४७. षं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं षं
४८. सं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं सं
४९. हं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं हं
५०. ळं ह्लीं ॐ जूं सः ह्लीं ळं

इसके बाद 'विलोम'-क्रम से 'ळं' से 'अं' तक (५१ से १०० तक) 'जप' करे। फिर 'अष्ट-

मातृका-वर्णों' (अं-कं-चं-टं-तं-पं-यं-शं) से १०१ से १०८ तक 'जप' करना चाहिए। अन्त में भगवती पीताम्बरा के एकाक्षर मन्त्र से सम्पुटित श्री मृत्युञ्जय-स्तोत्र का पाठ निम्न प्रकार से करना चाहिए–

।। एकाक्षर-मन्त्र से सम्पुटित श्री मृत्युञ्जय-स्तोत्र ।।

हल्रीं रत्न - सानु - शरासनं रजताद्रि - शृङ्ग - निकेतनं
शिञ्जिनी-कृत - पन्नगेश्वरमच्युतानल - सायकम् ।
क्षिप्र - दग्ध - पुर - त्रयं त्रिदशालयैरभिवन्दितं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः हल्रीं।।१।।

हल्रीं जिन्होंने मेरु पर्वत को धनुष, सर्पराज को प्रत्यञ्चा तथा अमोघ अग्नि को अपना बाण बनाया, और त्रिपुर को शीघ्रता से दग्ध कर दिया, रजत-पर्वत के शिखर पर जिनका निवास है, देवता जिनकी वन्दना करते हैं, चन्द्रमा जिनका शिरोभूषण है, उन भगवान् शङ्कर का मैं आश्रय लेता हूँ। यमराज मेरा क्या कर लेंगे। हल्रीं

हल्रीं पञ्च-पादप-पुष्प-गन्धि-पदाम्बुज-द्वय-शोभितं
भाल-लोचन-जात-पावक-दग्ध-मन्मथ-विग्रहम् ।
भस्म - दिग्ध - कलेवरं भव - नाशिनं भवमव्ययं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः हल्रीं।।२।।

हल्रीं मन्दार, पारिजात, सन्तान, कल्प और हरिचन्दन– इन पाँच दिव्य वृक्षों के पुष्पों की गन्ध से वासित अपने दोनों चरण-कमलों से जो सुशोभित हैं, जिन्होंने अपने ललाटस्थ नेत्र से उत्पन्न होनेवाली अग्नि-ज्वाला से कामदेव के दिव्य शरीर को जलाकर भस्म कर दिया, जिनकी देह पर भस्म मली हुई है, जो जन्म-मरण-रूप संसार-चक्र का नाश करनेवाले हैं, उन अव्यय, भव, चन्द्रशेखर का आश्रय लेता हूँ। यम मेरा क्या कर लेंगे? हल्रीं

हल्रीं मत्त-वारण - मुख्य-चर्म-कृतोत्तरीय - मनोहर
पङ्कजासन - पद्म-लोचन-पूजिताङ्घ्रि-सरोरुहम् ।
देव-सिद्ध-तरङ्गिणी-कर-सिक्त-शीत-जटा-धरं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः हल्रीं।।३।।

हल्रीं मतवाले गजेन्द्र के चर्म को अपना उत्तरीय बनाने पर भी जो अपने भक्तों का मन चुरा लेते हैं, कमलासन ब्रह्मा और कमल-लोचन भगवान् विष्णु के द्वारा जिनके पाद-पद्म पूजित होते हैं, देवताओं और सिद्धों की तरङ्गिणी श्रीगङ्गा जी जिनकी शीतल जटाओं को निरन्तर सींचती रहती हैं, उन जटाधारी भगवान् चन्द्रशेखर का आश्रय लेता हूँ। यम मेरा क्या कर लेंगे? हल्रीं

हल्रीं कुण्डलीकृत-कुण्डलीश्वर-कुण्डलं वृष-वाहनं
नारदादि - मुनीश्वर - स्तुत - वैभवं भुवनेश्वरम् ।
अन्धकान्तकमाश्रितामर - पादपं शमनान्तकं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः हल्रीं।।४।।

ह्लीं कुण्डली मारे हुए नागराज को जिन्होंने अपना कुण्डल बना लिया है, वृषभनन्दी जिनके वाहन हैं, नारदादि मुनीश्वर जिनके वैभव की स्तुति करते रहते हैं, जो सम्पूर्ण भुवन-मण्डल के स्वामी हैं, अन्धकासुर का विनाश करनेवाले, देव-तरु का आश्रय लेनेवाले और मृत्यु का अन्त कर देनेवाले उन चन्द्रशेखर का आश्रय ग्रहण करता हूँ। यम मेरा क्या कर लेंगे? ह्लीं

ह्लीं यम-राज-सखं भगाक्षि-हरं भुजङ्ग-विभूषणं
शैल-राज-सुता-परिष्कृत-चारु-वाम-कलेवरम् ।
क्ष्वेड - नील - गलं परश्वध - धारिणं मृग - धारिणं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ह्लीं।।५।।

ह्लीं जो यक्ष-राज कुबेर के सखा हैं, जो भग-देवता की आँख का हरण कर लेनेवाले हैं, भुजङ्ग जिनके आभूषण हैं, जिनके सुन्दर शरीर का वाम भाग शैल-राज-तनया की उपस्थिति से अलङ्कृत हो रहा है, गरल धारण करने के कारण जिनका गला नीला पड़ गया है, फरसे को धारण करनेवाले, मृग का पीछा करनेवाले उन भगवान् चन्द्रशेखर का जब मैं आश्रय ले रहा हूँ, तो यम मेरा क्या बिगाड़ लेंगे? ह्लीं

ह्लीं भेषजं भव - रोगिणामखिलापदामपहारिणं
दक्ष-यज्ञ-विनाशिनं त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचनम् ।
भुक्ति - मुक्ति-फल-प्रदं निखिलाघ-सङ्घ-निबर्हणं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ह्लीं।।६।।

ह्लीं जो भव-रोग से पीड़ित जनों के लिए औषध-रूप हैं, समस्त आपदाओं को दूर करनेवाले हैं, दक्ष के यज्ञ के विनाशक हैं, त्रिगुणात्मक हैं, तीन नेत्रवाले हैं, भोग और मोक्ष दोनों फल देनेवाले हैं, समस्त पाप-समूह के विनाशक हैं, उन भगवान् चन्द्रशेखर का मैं अवलम्बन करता हूँ। यम मेरा क्या कर लेंगे? ह्लीं

ह्लीं भक्त-वत्सलमर्चतां निधिमक्षयं हरिदम्बरं
सर्व - भूत - पतिं परात्परमप्रमेयमनूपमम् ।
भूमि-वारि-नभो-हुताशन-सोम-पालित-स्वाकृतिं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ह्लीं।।७।।

ह्लीं जो अर्चना करनेवाले अपने भक्तों के प्रति वात्सल्य-भाव रखते हैं, भक्तों की अक्षय निधि हैं, दिशाएँ ही जिनके वस्त्र हैं, समस्त भूतों के स्वामी हैं, परात्पर, अप्रमेय और अनुपम हैं, पृथ्वी जल आकाश अग्नि और सोम से जिनकी विश्व-रूप आकृति का पालन होता है, उन भगवान् चन्द्रशेखर का आश्रय लेता हूँ। यमराज मेरा क्या कर लेंगे? ह्लीं

ह्लीं विश्व - सृष्टि-विधायिनं पुनरेव पालन - तत्परं
संहरन्तमथ प्रपञ्चमशेष - लोक - निवासिनम् ।
क्रीडयन्तमहर्निशं गण - नाथ - यूथ - समावृतं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ह्लीं।।८।।

ह्लीं जो पहले जगत् की सृष्टि का विधान करते हैं, फिर उसका पालन करने में तत्पर हो जाते हैं और अन्त में अशेष प्रपञ्च का संहार कर देते हैं, सम्पूर्ण लोकों में जिनका निवास है, जो गणाधिपों के समूह से घिरे रहकर रात-दिन क्रीडा करते रहते हैं, उन भगवान् चन्द्रशेखर का मैं आश्रय ग्रहण करता हूँ। यम मेरा क्या कर लेंगे? ह्लीं

'चण्डी'-पुस्तक-माला की कुछ उपयोगी पुस्तके

पुस्तक	मूल्य
➢ शाबर-मन्त्र-संग्रह (१-१२ भाग)	५१५/-
➢ मन्त्र-कल्पतरु (पुष्प १-२)	७०/-
➢ तन्त्रोक्त शब्द-ब्रह्म-साधना	४०/-
➢ श्री श्रीविद्या-सपर्या-वासना	१००/-
➢ सौन्दर्य-लहरी के यन्त्र-प्रयोग	२०/-
➢ सौन्दर्य-लहरी (संस्कृत एवं हिन्दी पद्यानुवाद सहित)	१५/-
➢ सार्थ सौन्दर्य-लहरी	१००/-
➢ श्रीचक्र-रहस्य	२०/-
➢ श्री श्रीविद्या-खड्ग-माला	१५०/-
➢ श्रीविद्या-स्तोत्र-पंचकम्	४५/-
➢ षोडश-लक्ष्मी श्रीललिता-पूजा	२५/-
➢ चक्र-पूजा के स्तोत्र	३०/-
➢ श्रीकमला-कल्पतरु (३ पुस्तकें)	१२०/-
➢ दीपावली विशेषांक	६५/-
➢ रासलीला-विज्ञान	१०/-
➢ श्रीराम-नाम- अङ्क	१०/-
➢ कुम्भ-पर्व-अङ्क	१५/-
➢ हिन्दी कुलार्णव तन्त्र	१००/-
➢ हिन्दी प्राण-तोषिणी तन्त्र	७०/-
➢ हिन्दी महा-निर्वाण तन्त्र	१५०/-
➢ काश्मीर की वैचारिक परम्परा	१०/-
➢ गङ्गा-यमुना-सरस्वती पूजा अङ्क	१०/-
➢ धर्म-चर्चा	१०/-
➢ दकारादि श्रीदुर्गा-सहस्त्र-नाम	२०/-
➢ बीजात्मक सप्तशती	२५/-
➢ हिन्दुओं की पोथी	२५/-
➢ श्रीगुरु-तन्त्र	१५/-
➢ दीपावली पूजा-विधि	२५/-

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें

श्रीचण्डी-धाम

अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-०६ ☎ फोन ०५३२-२५०२७८३, ९४५०२२२७६७
E-mail : Chandi_dham@rediffmail.com

परब्रह्म की चिन्मय-शक्तियाँ

जय माँ भैरवी!
परब्रह्म-रूपां भजामि

जय माँ धूमावती!
परब्रह्म-रूपां भजामि

जय माँ बगला!
परब्रह्म-रूपां भजामि

जय माँ मातंगी!
परब्रह्म-रूपां भजामि

जय माँ कमला!
परब्रह्म-रूपां भजामि

श्रीबगला ध्यानावली

पं० देवीदत्त शुक्ल

पीत-पीत वसन प्रसार करैं देह-छवि,
अङ्ग-अङ्ग भूषन, सु-पीत झरि लावै हैं।
मुख-कान्ति पीत-पीत, तीनों नेत्र पीत-पीत,
अङ्ग-राग पीत-पीत शोभा सरसावै है।।
निज भीत भक्तन को, जीत देति दौरि आय,
अपनी दया को, रूप प्रकट दिखावै है।
बगला! तिहार नाम जपत, स-भक्ति जौन,
भुक्ति पावै मुक्ति पावै, पीता बन जावै है।।१।।

❖❖❖

पीले-पीले वसन हैं, भूषन हू पीले-पीले,
सुमुखी विचित्र रूप, आपनो दिखायो है।
झपटि गही है जीभ, निज भक्त-शत्रु कर,
मारिबे को ताहि बेगि, मुद्गर उठायो है।।
चकित कियो है ताहि, बार-बार त्रस्त करि,
बोलि न सकत वह, ऐस डर पायो है।
बगला! तिहारो देखि, अद्भुत स्वरूप यह,
साधक प्रसन्न-मन, तोर यश गायो है।।१।।
कोऊ जपै ह्लीम ह्लीम, द्वि-भुज विलोकि रूप,
कोऊ जपै हरीं, ध्याय चार भुज-धारिणी।
हलरीम कोऊ जपै, हिय लाय दिव्य रूप,
पावत प्रमोद भूरि, भक्ति अन-पायिनी।।
बगला! भवानी तोरि, विशद कहानी जग,
जानि-जानि रीझै तो पै, तू ही मन-भाविनी।
भक्तन को खोजि-खोजि, उर लाय हरै पीर,
अम्बिका तिहारी दया, भुक्ति-मुक्ति-दायिनी।।२।।

❖❖❖

सम्पर्क-सूत्र : कल्याण मन्दिर प्रकाशन
श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६
फोन : ०५३२-२५०२७८३, ०९४५०२२२७६७